★★★

अगर आप सोचते हैं कि बच्चों के अच्छे उपन्यास हिन्दी में नहीं हैं, तो निश्चय ही आपको हमारी किशोरों के लिए उपयोगी पुस्तकें पढने या देखने का अवसर नहीं मिला है। एक-दो या चार-दस नहीं, बल्कि ७० से भी ज्यादा किशोर-उपन्यास हम प्रकाशित कर चुके हैं, आगे और प्रकाशित करने जा रहे हैं।

विषय भी हमने अनेक चुने हैं। ऐतिहासिक नायक-नायिकाएं, 'अरब की रातों' के राजा-रानी, ज्ञान-विज्ञान का अनोखापन, रामायण और महाभारत के पात्र, राष्ट्र और विभिन्न धर्मों के नायक, शिकार, रोमांचकारी घटनाएं, प्रख्यात साहित्यकारों का जीवन और शेक्सपियर के नाटकों के रूपान्तर—कोई भी तो विषय ऐसा नहीं, जिसकी जानकारी निहायत दिलचस्प उपन्यासों के माध्यम से न दी गई हो। बच्चे तो बच्चे, बच्चों के माता-पिता भी अगर इन्हें ले बैठें तो पढ़ते ही रह जाएं।

ये किशोर-उपन्यास नवसाक्षरों तथा अहिन्दी-भाषी पाठकों के लिए भी समान रूप से उपयोगी हैं।

राष्ट्र के नए नागरिकों का निर्माण—
यही है हमारा उद्देश्य।

किशोर-उपन्यास-माला पुष्प के

सचित्र, सरस तथा स-उद्देश्य

वीर रस से पूर्ण

कर्ण

अर्जुन — भीष्म
हल्दी घाटी — श्री कृष्ण
खूब लड़ी मर्दानी — वीर कुँवरसिंह
गुरु गोविन्द सिंह — सम्राट् शिलादित्य
चित्तौड़गढ़ की रानी — चन्द्रगुप्त विक्रमादित्य
वीरांगना चेन्नम्मा — महाबली छत्रसाल
गढ़मण्डल की रानी — बाजीराव पेशवा
महाबली इन्द्र — चन्द्रगुप्त मौर्य
सम्राट् अशोक — तांत्या टोपे
जय भवानी — वीर कुणाल
दुर्गादास — उदयन

चक्रवर्ती दशरथ

अन्य महापुरुषों पर आधारित

महाकवि कालिदास — गुदड़ी का लाल : लालबहादुर
शान्ति—दूत नेहरू — मदुरा की मीनाक्षी
ऋषि का शाप — देवता हार गए
स्वामी दयानन्द — आचार्य चाणक्य
गुरु नानक देव — मीरां बावरी
गुरु अंगद देव — संत कबीर
गुरु अमरदास — रवि बाबू
गौतम बुद्ध — विश्वामित्र

रेखाओं का जादूगर

बापू

शेक्सपियर के नाटकों पर आधारित

तूफान	हैमलेट	भूल पर भूल
मैं क बेथ	राजा लियर	रोमियो जूलियट
जूलियस सीज़र	राई से पहाड़	वेनिस का सौदागर
ऑथेलो	निराशा	जैसा तुम चाहो

शिकार, ज्ञान-विज्ञान, 'अरोबियन नाइट्स' पर आधराति

दत्याकार पक्षी का शिकार	हाथी का शिकार	अलीबाबा: चालीस चोर
रूपा और लल्ली	बाघ का शिकार	मगरमच्छ का शिकार
ह्वेल का शिकार	पूपू	अरब के मसखरे
उड़ने वाला घोड़ा		दरियाबर द्वीप की शहज़ादी

साहसिक कहानियां

रंग बिरंगी परियां
हमारे बहादुर जवान
हमारे बहादुर हवाबाज़
विश्व की साहसिक गाथाए
देश-देश की परिया भारत आई
भारत के साहसी वीरो की गाथाएं
शिकार की रोमांचकारी सच्ची गाथाए
साहस-रोमाच की सच्ची कहानियां
नेफा और लद्दाख के साहसी वीरो की गाथाए

परिचय

इस विज्ञान के युग में भी कुछ ऐसी प्राचीन विद्याएं हैं जिनका चमत्कार देखकर दंग रह जाना पड़ता है। ज्योतिष एक ऐसी ही विद्या है। भारतीय ज्योतिष का स्थान सर्वोच्च है। कितने ही विदेशी विद्वानों ने भी इसका अध्ययन किया है। प्रोफेसर कीरो हस्तरेखाओं का विश्वप्रसिद्ध ज्ञाता माना जाता है। किस प्रकार उसने भारत में यह विद्या सीखी और किस प्रकार संसार को अपने ज्ञान से चमत्कृत किया, इसका अत्यंत रोचक और प्रामाणिक वर्णन इस पुस्तक में मिलेगा। रेखा-विज्ञान पर कीरो की लिखी अनेक पुस्तकें मिलती हैं, पर स्वयं उसकी जीवन-कथा सहज सुलभ नहीं है। कीरो की जीवनी को उपन्यास रूप में प्रस्तुत करने का यह सर्वप्रथम प्रयास है। आशा है, पाठकों के मनोरंजन और ज्ञानवर्धन में इसे सफलता मिलेगी।

प्रकाशक

धाँय ! गोली छूटने की भयानक आवाज दूर तक गूंज उठी। अँधेरी रात का तीखा ठंडा सन्नाटा थर्रा उठा। आसपास के मकान जैसे हिल उठे और सरसराती हुई ठंडी हवा में बारूद की गन्ध भर गई।

घटना इंगलैण्ड की राजधानी और संसार के सबसे बड़े नगर लन्दन की है। शहर का पूर्वी भाग। माउण्ट स्ट्रीट नामक मुहल्ले के एक तिमंजिले मकान के सबसे ऊपर वाले कमरे में एक बूढ़ी धाय बैठी थी—मेरिया। उम्र कम से कम पचास बरस की जरूर रही होगी; स्थूल देह, गम्भीर चेहरा। उसके माथे पर बल पड़ गए।

घना कुहरा पड़ रहा था। तीखी और ठंडी हवा का एक भी झोंका लगता तो जैसे शरीर सुन्न पड़ जाता। दिन में कुछ बूंदा-बाँदी भी हो चुकी थी, इसलिए ठंडक कुछ अधिक थी। चारों ओर नमी थी।

मेरिया को गठिया की बीमारी थी। सर्दी में उसके जोड़ों का दर्द उभर आता था। उस दिन भी दर्द बढ़ा हुआ था। इसलिए उसने अंगीठी जला रखी थी। वैसे भी ठंडे देशों में लोग कमरा अँगीठी से गरम रखते हैं। मेरिया अँगीठी के सामने बैठी घुटने सेंक रही थी। तभी, एकाएक वह कलेजा दहला देने वाली आवाज सुनाई पड़ी। वह हड़बड़ाकर उठ बैठी। एकाएक समझ ही नहीं पाई कि क्या हुआ ?

तभी हवा का एक झोंका आया। उसमें बारूद की गन्ध भरी हुई थी। मेरिया समझ गई कि किसी ने बन्दूक दागी है। लेकिन इतनी बदबू ! इतना धुआँ ! जरूर इसी मकान में किसी ने गोली चलाई है।

उन दिनों डकैती की घटनाएँ बहुत होती थीं। किसी को गोली मार देना डाकुओं के लिए एक खेल था। मेरिया ने छड़ी उठाई और कमरे के बाहर निकलकर जीने की ओर बढ़ी।

सीढ़ी पर पहुँचकर उसने देखा, सामने से जान चला आ रहा है। उसके पीछे एक लड़का और है—यंग। दोनों भागते आ रहे हैं। मेरिया का सन्देह बढ़ गया। पूछा, "क्या है ? भाग क्यों रहे हो ?"

जान ठिठक गया। कुछ बोला नहीं। उसकी बड़ी-बड़ी आँखें भय और शंका के कारण और भी बड़ी दीख रही थीं। यंग ने बताया, "गोली चल गई ! भगवान ने बड़ी मदद की, नहीं तो न जाने क्या हो जाता !"

"गोली किसने चलाई ?" मेरिया ने पूछा।

"जान ने चलाई।"

"क्यों ?"

"बस, धोखे से चल गई। यह बार-बार उसका ट्रिगर टटोल रहा था। अचानक वह दब गया।"

"किसी को चोट तो नहीं आई ?"

"नहीं। कोई था ही नहीं। गोली सामने की दीवार में धँस गई।"

मेरिया ने डाँटकर जान से पूछा, "क्यों रे शैतान ! ऐसा उपद्रव क्यों करता है !"

जान सिटपिटा गया।

ठंडी हवा का झोंका आया, तीनों सिहर उठे। मेरिया

लौटते हुए कहा, "चल मेरे साथ चुपचाप भीतर बैठ!" और वह अपने कमरे की ओर घूम पड़ी।

जान और यंग कुछ हिचकिचाए-से ,उसके पीछे-पीछे चलने लगे।

मेरिया बड़बड़ा रही थी, "इन बदमाशों को न सरदी लगती है, न गरमी! अंधेरे-उजाले—जब भी देखो, एक न एक शरारत करते रहते हैं। पता नहीं, आगे चलकर शरीफ आदमी होंगे, या निरे लुच्चे-लफंगे। मेरा तो जी ऊब गया इस जान की शैतानियों से। यही इरादा होता है कि···"

वे कमरे तक पहुँच गए थे, इसलिए मेरिया ने अपना इरादा प्रकट किए किए बिना ही पीछे घूमकर देखा और बोली, बैठो यहीं चुपचाप!"

लेकिन वहाँ कोई न था। दोनों लड़के बीच से ही कहीं सरक गए थे। मेरिया ने आँखें फाड़कर देखा, बरामदा सूना था। उसने अपना सिर पीट लिया और लगभग रुआँसी होकर आकाश की ओर देखती हुई बिसूरने लगी, "हे परमात्मा! इस शैतान को बुद्धि दे। पता नहीं कब क्या कर बैठें! मालिक उसे मेरे भरोसे छोड़कर निश्चिन्त हैं और यह है कि न पढ़ने की फिक्र, न ठीक से खाने-पीने की। सुनकर मालिक क्या कहेंगे!"

हवा का एक झोंका फिर आया। मेरिया को लगा, जैसे बदन में ठंडे तीर चुभ रहे हों। वह झपटकर कमरे के अन्दर चली गई और उसने किवाड़ बन्द कर लिए।

जान एक खंभे की ओट में छिप गया था। मेरिया नें खीझकर किवाड़ बन्द कर लिए तो उसने अपने साथी से पूछा, "अब?"

उसके साथी यंग ने कहा, "जैसा कहो।"

जान ने पलभर सोचकर पूछा, "डेविड के घर चलोगे?"

यंग ने कोई उत्साह नहीं दिखाया। बोला, "यार ! इतनी रात में उस गप्पी के घर जाने का इरादा तो नहीं हो रहा है !"

"गप्पी ! तुम डेविड को गप्पी कहते हो ?"

"और क्या ? गप्पी तो है ही। उड़ाता है, तो फिर चुप होने का नाम ही नहीं लेता। यह भी नहीं सोचता कि लोग क्या कहेंगे ?"

"उड़ाता नहीं भाई, वह सच कहता है।"

"मुझे तो विश्वास नहीं होता।" यंग दबी आवाज में बोला।

"मुझे तो होता है।"

"ठीक है, तुम विश्वास करो।"

"इसी से तो कहता हूँ कि उसके पास चलो।"

यंग धीरे से बोला, "तो फिर चलो, वहीं चलें। वैसे, मेरा इरादा तो अब सो जाने का था।"

"अजी, जाओ भी !" जान ने उसकी पीठ पर एक धौल जमाते हुए कहा, "सरेशाम ही नींद आने लगी ? तुमसे तो भली मेरी धाय मेरिया है, जो इस समय भी बैठी मुझ पर बड़बड़ा रही होगी।" वह ठठाकर हँस पड़ा।

यंग मुस्कराया, "हाँ जान ! मेरिया को तुम बहुत परेशान करते हो। बेचारी चौबीसों घण्टे सिर धुनती रहती है।

जान ने वैसे ही शरारत भरे स्वर में कहा, "इस वक्त भी बैठी मुझे कोस रही होगी।"

"इसी से तो कहता हूँ, जाकर सो रहो। क्यों बेचारी को परेशान करते हो ?"

"वाह रे दयावान ! देखो यंग, मैं कहता हूँ, मुझे बहकाने का विचार छोड़ दो। या तो तुम चुपचाप डेविड के घर चलोगे या फिर अस्पताल !"

"अस्पताल में क्या है भाई ?" यंग ने चकित होकर पूछा।

"आखिर अपने साथ न चलने पर मैं तुम्हारी हड्डियाँ ...ड़ूँगा न ! उनकी मरम्मत अस्पताल में ही तो हो सकेगी।" ...हकर जान आस्तीनें चढ़ाने लगा।

यंग हँस पड़ा, "तो अब तुम गुण्डागीरी पर आमादा हो गए ? लेकिन भाई, मैं अपनी हड्डी नहीं तुड़वाऊँगा। चलो, उस गपो-ड़िए डेविड के घर तक तुम्हें पहुँचाए देता हूँ। लेकिन एक बात है, मैं वहाँ ठहरूँगा नहीं। तुम्हीं बैठकर उसकी बकवास सुनना। मैं घर लौट आऊँगा।"

"ठीक है। मुझे वहाँ तक पहुँचाकर चाहे भाड़ में चले जाना, मुझसे कोई मतलब नहीं।"

दोनों चल पड़े।

जीने की सीढ़ियाँ उतरकर वे नीचे आए। गली के उत्तरी मोड़ पर बत्ती जल रही थी। यंग ने कहा, "कुहरा बहुत है, जान! देखो, कितनी सर्दी पड़ रही है !"

"डेविड अँगीठी जलाए होगा।" जान ने आगे बढ़ते हुए कहा।

दोनों चलते रहे। थोड़ी देर बाद डेविड का घर आ गया।

यंग ने कहा, "जान ! मैं तो अब जाऊँगा।"

"कहाँ ? जहन्नुम ?" हँसकर जान ने कहा।

"नहीं; जाता हूँ तुम्हारी धाय के पास। मेरिया को ऐसी पट्टी पढ़ाऊँगा कि कल तुम घर में पैर भी न रखने पाओगे।" कहकर यंग मुस्कराया।

"ठीक है, जाओ। उधर ही अस्पताल की नर्स से भी मिल जाना, जो तुम्हारे लिए पहले से ही मरहम-पट्टी तैयार ... रखे।" जान ने हँसकर हाथ मिलाया।

"अच्छा, गुड नाइट !" कहकर यंग चल पड़ा।

जान ने बढ़कर थपकी दी। दरवाजा स्वयं डेविड ने खोला। "अरे तुम, जान? आओ, भीतर चले आओ। उफ, कितनी सरदी है!"

जान भीतर चला गया।

दरवाजा फिर बन्द करके वह जान को लिए हुए अपने कमरे में पहुँचा। अँगीठी धधक रही थी। दोनों आमने-सामने कुर्सियों पर बैठ गए। डेविड ने पूछा, "कैसे आए?"

"आप ही के पास आया था।"

"कोई खास बात है?"

"बस, ऐसे ही चला आया। मुझे आपसे बातें करने में बड़ा मजा आता है। कहीं का कोई हाल सुनाइए। मुझे ऐसी बातें बड़ी अच्छी लगती हैं।"

डेविड मुस्कराया, "शाबाश! तुम जरूर एक दिन अपना नाम सारी दुनिया में फैला लोगे, जान! ज्ञान की खोज में भटकने वाले बहुत कम हैं। मैंने तुम में जितना उत्साह देखा है, उतना किसी बड़े-बूढ़े में भी नहीं दिखाई पड़ता।"

उसने जान की पीठ पर हाथ फेरा।

जान पुलकित हो उठा। कृतज्ञता के कारण उसका सिर झुक गया था।

"एक मिनट बैठो, मैं अभी आया।" डेविड दूसरे कमरे में चला गया।

जान ने एक बार कमरे में चारों ओर निगाह दौड़ाई। मेज पर लैम्प जल रहा था। कमरे की हर चीज स्पष्ट दिखाई पड़ रही थी। दीवारों, अलमारियों और कार्निस पर तरह-तरह की विचित्र वस्तुएँ सजी हुई थीं—कहीं हिरन के सींग, कहीं शेर की खाल; कहीं शंख, कहीं सीपी; कहीं मोरपंख, कहीं हड्डियों के ढेर और कहीं तरह-तरह के औजार-हथियार। कुछ पुराने सिक्के

वह तरह-तरह की कठिनाइयाँ उठाकर विदेशों से लाया था। उनमें से अनेक उसने अपने मित्रों को दे दी थीं, फिर भी उसके पास संसार की विचित्र वस्तुओं का अच्छा-खासा संग्रह था। उसका कमरा एक छोटा-मोटा अजायबघर जैसा प्रतीत होता। जब कभी कोई फुरसत के समय जाकर कहता, "डेविड चाचा! *कोई सच्ची कहानी सुनाओ, जो तुमने देखी-सुनी हो!"* तो डेविड उसे प्रसन्नतापूर्वक अपने जीवन का कोई अनुभव सुना देता था।

जान और यग कभी-कभी डेविड के पास जाया करते थे। जान ऐसी अद्भुत बातें सुनने का विशेष शौकीन था। वह प्रायः डेविड के यहाँ जाकर सैर और शिकार की कहानियाँ सुना करता।

कमरे में अकेला बैठा जान बडी देर तक उसी नर-ककाल की ओर देखता रहा। थोडी देर बाद डेविड आया। जान ने उत्सुक होकर पूछा, "यह ढाँचा कहाँ से लाए थे, चाचा?"

डेविड कुर्सी पर बैठ गया। अँगोठी कुरेदकर उसने आग तेज की, फिर कोट के कालरो से कान ढकते हुए बोला, "इसकी कहानी बहुत लम्बी है, जान! जितनी परेशानी इसके लिए मैंने उठाई, उतनी और किसी चीज के लिए नही।"

"अच्छा!" जान चकित हुआ।

"यह ढाँचा जिस आदमी के शरीर का है, वह मेरा बहुत दोस्त और सहयात्री था। तीन बरस तक हम दोनों [illegible] और अफ्रीका मे साथ-साथ घूमे थे।"

जान स्थिर दृष्टि से डेविड की ओर देखता रहा।

"यह हिन्दुस्तान के पजाब प्रदेश का रहने वाला [illegible] बहादुरी और भलमनसाहत की याद आती है तो [illegible] उदासी घेर लेती है।" डेविड ने एक लम्बी [illegible]

"लेकिन...वह मरा कैसे ?"

"वह बड़ी लम्बी कहानी है। सिर्फ इतना ही बता सकता हूँ कि इसकी मौत अपने हाथों हुई थी। इसे बता दिया गया था कि आज तुम्हारा अन्तिम दिन है। सुनकर इसे विश्वास नहीं हुआ था, लेकिन बताने वाले की बात गलत नहीं उतरी। उसी दिन दो घण्टे बाद यह अपने ही हाथों मारा गया था।"

जान का कौतूहल बढ़ गया। उसने उतावले स्वर में पूछा, "पूरा हाल सुनाओ, बाबा! कैसे हुआ था यह सब ? उस आदमी ने क्या बताया था ? उसे इसकी मौत के बारे में कैसे मालूम हो गया था ?"

डेविड ने एक बार पीठ सीधी की। फिर दाहिना पैर बाएँ पर रख लिया और थोड़ा लम्बा होकर लेट गया। दस्तानों के बटन बन्द करता हुआ बोला, "इसका नाम था जयपाल। जाति का जाट था। शिकार का बड़ा ही शौकीन। सिर्फ एक तलवार लेकर शेर-चीते से भी भिड़ जाता था। तैरने और कुश्ती लड़ने में इतना माहिर था कि इसका मुकाबला करने वाला मैंने देखा ही नहीं। जहाँ जाता, अपना और हिन्दुस्तान का नाम ऊँचा कर देता था। कई बार तो इसने मुझे भी मौत के मुँह से बचाया था।" डेविड गीली आँखों से सामने खड़े कंकाल की ओर देखने लगा।

एक मिनट प्रतीक्षा करने के बाद जान ने पूछा, "फिर क्या हुआ ?"

डेविड ने एक क्षण कुछ सोचा, फिर वैसी ही गहरी साँस छोड़कर बोला, "उन दिनों मैं मलाया में था। साथ में जयपाल भी था। एक दिन हम दोनों घूमने निकले। सड़क के किनारे एक बूढ़ा आदमी बैठा था। उसके पास दो-तीन आदमी खड़े अपना हाथ दिखा रहे थे। हम भी खड़े हो गए। वह भी

हिन्दुस्तानी था। उसका पेशा था—हाथ देखना ··· "

"हाथ देखना ? क्या मतलब ?" जान ने पूछा।

"हाँ ! वह किसी का भी हाथ देखकर उसके भूत-भविष्य के बारे में तमाम बातें बता देता था। हमें भी ताज्जुब हुआ। जयपाल ने कहा, यह मेरे देश का ब्राह्मण है, ज्योतिष के सहारे कई बातें बता सकता है।'

"मैं समझ गया कि यह पामिस्ट यानी हस्तरेखाओं का ज्ञाता है। जर्मनी में मैंने इस तरह के कुछ जिप्सी भी देखे थे। सोचा, अपना हाथ दिखा लूँ। तब तक जयपाल ने उसके पास पहुँचकर अपना हाथ बढ़ा दिया और कहा, 'बाबा, जरा मेरे बारे में भी तो कुछ बताओ !'

"उस बूढ़े ने थोड़ी देर तक जयपाल का हाथ देखा, फिर उदास होकर बोला, 'अब तुम जाकर भगवान का ध्यान करो।'

"हम दोनों अचम्भे में पड़ गए। उसने फिर गहरी साँस खींचकर जयपाल से कहा, "आज तुम्हारा आखिरी दिन है। शाम तक किसी हथियार से घायल होकर तुम मर जाओगे।"

"सुनकर जयपाल सन्न रह गया। मुझे हिन्दुस्तानी के सामने अपना हाथ बढ़ाने की हिम्मत ही नहीं पड़ी। हम दोनों डेरे की ओर लौट पड़े।"

एक मिनट रुककर डेविड ने फिर कहानी शुरू की—

"जयपाल ने सोचा, मैं अपने सारे हथियार सँभालकर रख लूँ, ताकि अगर कोई मुझ पर हमला करे, तो मैं रक्षा कर सकूँ। मैं बरामदे में बैठा अपनी डायरी देख रहा था, उधर वह हथियारों की जाँच करने लगा। उसके पास कई हथियार थे—चाकू से लेकर बन्दूक तक। एक छोटी-सी स्प्रिंगदार कमान भी थी, जिस पर वह एक फुट लम्बे तीर चढ़ाकर भयंकर मार कर सकता था। निशानेबाजी में जयपाल बड़ा पक्का था। एक बार

तो उसने एक ही तीर से चीते की आँख फोड दी थी। कुश्ती-कसरत का तो कहना ही क्या! लाठी ऐसी चलाता था कि पचीसों आदमियों का झुण्ड तितर-बितर करके अछूता घेरे से बाहर निकल जाता था। उस दिन हथियारों की जाँच करते समय न जाने कैसे, अचानक कटार की नोक उसकी हथेली में चुभ गई। घाव तो मामूली ही था, लेकिन उसी के कारण वह बहादुर हिन्दुस्तानी हमेशा के लिए सो गया।"

जान ने डेविड की कहानी सुनी, लेकिन समझ नहीं [illegible] कि इतना साहसी और बलिष्ठ आदमी कटार की उस [illegible] खरोंच से कैसे मर गया। उसने डेविड से कहा, "लेकिन [illegible] क्या जयपाल सचमुच उसी घाव की वजह से मरा था? [illegible] उसे कोई बीमारी रही होगी, या फिर हार्ट फेल [illegible] होगा।"

"क्या कहते हो, जान? भला जयपाल जैसे [illegible] को बीमारी छू सकती है! वह तो तन्दुरुस्त आदमियों में [illegible] चैम्पियन जैसा था। मौत हुई उसी घाव के कारण। [illegible] कटार की धार जहर में बुझाई हुई थी। उसकी एक खरोंच हाथी को भी मार सकती थी, तब भला जयपाल क्या [illegible] सकता था?"

"फिर क्या हुआ?"

"हुआ क्या! मरने के पहले उसने मुझसे कहा था कि [illegible] देह पहले चिड़ियों को दे दी जाए और हड्डियाँ [illegible] दिया जाए! मैंने यही किया। उसकी लाश [illegible] गिद्धों ने खा डाला। और यह [illegible] न घृणा है, न डर। मेरा परम मित्र जयपाल [illegible] आज भी मुझे उससे भेंट करा देती है।"

"इसे आपने दफनाया नहीं?"

"दफनाया तो! कहीं भी हिफाजत से बन्द कर देने को ही दफनाना कहा जाता है। मैंने जयपाल को धरती के नीचे न सही, ऊपर ही दफना दिया। काठ का ताबूत है, ही। आखिर यह शीशेदार अलमारी और क्या कही जाएगी ?"

जान एक क्षण चुपचाप जयपाल की ठठरी की ओर देखता रहा, फिर बोला, "वह आदमी जरूर बुद्धिमान था, जिसने इसकी मौत की बात बता दी थी।"

"हाँ, वह एक कुशल भविष्यवक्ता था। जयपाल के देश में तो एक से एक बढ़कर ज्योतिषी रहते हैं।"

"सच ?"

"हाँ, मैंने स्वयं भी देखा है और जयपाल भी बताया करता था। हिन्दुस्तान, चीन और जर्मनी में आज भी बहुत अच्छे पामिस्ट हैं! लेकिन उनसे मिलने में बड़ी दिक्कत होती है। वे लोग पैसे नहीं चाहते। घने वनों में तपस्या किया करते हैं। कोई जाए तो ढूंढना पड़ता है, बड़ी परेशानी उठानी पड़ती है।"

"कभी चलिए हिन्दुस्तान! मैं भी इस विद्या के चमत्कार को देखना चाहता हूँ।"

"म अगले महीने अदन जा रहा हूँ। जी चाहे तो मेरे साथ चले चलना। अदन तक साथ रहेगा, उसके बाद ही हिन्दुस्तान है।"

जान उछल पड़ा। डेविड से लिपटकर बोला—"मेरे अच्छे चाचा! में जरूर चलूँगा, लेकिन किसी से बताना नहीं। अब में जाकर तैयारी करता हूँ।"

"जाओ!" कहकर डेविड अपनी डायरी के पन्नों में खो गया। शायद वह कोई पुराना पता ढूँढ़ रहा था।

जान ने आदर सहित अभिवादन किया और उछलते हुए

बाहर निकल गया।

डेविड सोच रहा था, जान किसी समय अव्वल दर्जे का घुमक्कड़ बनेगा। इसे ज्ञान से प्रेम है। उसकी खोज में भटकने से यह प्रसन्न होता है।

उधर जान सोचता हुआ जा रहा था, ईश्वर चाहेगा तो अब एक साथ कई देशों की सैर हो जाएगी। मैं भी देखूँगा कि हिन्दुस्तान के पामिस्ट कैसे होते हैं ?

घर आ गया था। उसने थपकी दी। भुनभुनाती हुई मेरिया ने दरवाजा खोला और उसकी पीठ पर एक प्यार-भरी धौल जमाती हुई बोली, "रात भर घूमना लफंगों का काम है ! पता नहीं, यह किस दर्जे का बदमाश होगा ?"

जान ने कोई उत्तर नहीं दिया। चुपचाप अपने कमरे में जाकर लेट गया। उस रात वह सपने में भी दूर-दूर के देशों की सैर करता रहा।

२

जान का पूरा नाम था जान ई० वार्नर। उसका पिता किसी व्यापारिक कम्पनी में काम करता था। उसे घर पर रहने का मौका बहुत कम मिलता था। वह अक्सर फ्रांस, जर्मनी और अमेरिका की यात्रा करता रहता। पत्नी का देहान्त हो चुका था, इसलिए उसने अपने पुत्र जान का पालन करने के लिए मेरिया को धाय के रूप में नियुक्त कर रखा था।

मेरिया बहुत ही दयालु, ईमानदार और ममतामयी विधवा थी। उसके कोई सन्तान न थी। बेचारी अकेली थी और गरीब। नौकरी पाकर वह बड़ी ही सावधानी से जान का पालन करने लगी। उसे वह अपने पुत्र की भाँति मानती। कभी कोई शिकायत नहीं उठने दी।

लेकिन जान का मन घर में रमता न था। वह बचपन से ही स्वतन्त्र प्रकृति का था। पढ़ने-लिखने में उसकी विशेष रुचि न थी। उसे तो बस भ्रमण और तरह-तरह की अनोखी बातें देखने-सुनने का शौक था। वह शिकार का भी प्रेमी था। बुद्धि तीव्र थी—एक बार वह जो कुछ देख य सुना लेता, उसे हमेशा के लिए याद हो जाता था। बातचीत में भी पटु था। पड़ोसियों ने उसका नाम रख छोड़ा था—फक्कड़।

अगले महीने जान ने डेविड के संग अदन के लिए प्रस्थान कर दिया। साथ में उसका मित्र यंग भी था। यंग धनी परिवार का था, लेकिन जान की तरह बुद्धिमान और जिज्ञासु

नहीं। उसका शौक था—पैसा उड़ाना। डेविड के साथ रहने में कोई परेशानी न होगी, इसका उसे विश्वास था। वह जेब खर्च के लिए दो सौ गिन्नियाँ लाया था। डेविड ने दोनों को अपने साथ एक ही केबिन में रखा और हँसते-बोलते यात्रा आरम्भ हुई।

जहाज का नाम था 'वाटरकिंग' अर्थात् 'जलराज'। सचमुच वह समुद्र का राजा ही था—बड़ा ही लम्बा-चौड़ा और मजबूत। सैकड़ों मन सामान और सैकड़ों यात्रियों का भार उठाए वह बड़ी शान से समुद्र की छाती रौंदता चला जा रहा था। उन दिनों समुद्री डाकुओं से भिड़न्त होने का डर लगातार बना रहता था, इसलिए जहाज मे दो तोपे भी लगवा ली गई थी। साथ ही पचास बन्दूकधारी सिपाही भी थे, जो ऊपर डेक पर बैठे हर वक्त चौकसी करते रहते थे। वे सैनिक भी थे और मल्लाह भी। समय पड़ने पर हर तरह का काम कर सकते थे। उनका सरदार थोड़ी-थोड़ी देर में दूरबीन लगाकर चारों ओर की टोह ले लेता था।

वाटरकिंग का इंजन अच्छा था। वह तेज रफ्तार से चल रहा था। लन्दन से चले तीन दिन हो गए थे। आशा थी कि अगले हफ्ते जहाज अदन पहुँच जाएगा, किनले तभी एक दुर्घटना हो गई और यात्रा का सारा कार्यक्रम भग हो गया।

शाम को चार बजे कप्तान ने सूचना दी, "सावधान हो जाओ, तूफान आ रहा है।"

मल्लाह सभल गए। सिपाही भी चौकन्ने हो गए। सब लोग जहाज की रक्षा में जुट गए। यात्री-दल मे खलबली मच गई। भय और चिन्ता के कारण लोगों के चेहरे पीले पड़ गए। समुद्री तूफान बहुत भयकर होता है। उसमे फँसकर अच्छे-अच्छे जहाज भी चूर-चूर हो जाते हैं।

यात्रा का सारा उत्साह ठंडा पड़ गया। एक बात और
—कुछ यात्रियों को समुद्री बीमारी[1] भी हो गई थी। वे पड़े
कराह रहे थे। तूफान का नाम सुनते ही वे रोने लगे। बीमारी
से वे कुछ दुर्बल हो गए थे। अब डूब जाने की शंका ने उनका
धीरज छीन लिया। वे गिड़गिड़ाते हुए जोर-जोर से प्रार्थना
कर रहे थे, "हे भगवान्! हमारी रक्षा करो!

खतरे का घण्टा बजते ही जहाज की गति धीमी पड़ गई।
मल्लाहों ने पाल-मस्तूल सँभालना शुरू कर दिया। ऊपर बँधी
नावें तैयारी कर ली गईं। सारे दरवाजे बन्द करा दिए गए
और यात्रियों को हुक्म दिया गया, "अपने-अपने केबिन में
बैठो।"

डेविड उस समय छत पर था। जान और यंग भी उसी के
साथ थे। तीनों डेक पर खड़े बातें कर रहे थे। तूफान की
सूचना पाकर डेविड ने कहा, "तूफान आ रहा है। चलो,
भीतर बैठें।

जान ने कभी समुद्री तूफान नहीं देखा था। वह जहाज पर
भी पहली ही बार बैठा था। पूछा, "तूफान में क्या हो सकता
है, चाचा?"

थोड़ी देर के लिए जहाज को रोकना पड़ सकता है या
शायद हवा के रुख के साथ ही अपना रास्ता बदल देना पड़े।
यह भी हो सकता है कि…" डेविड चुप हो गया।

"क्या…?" यंग ने चौंककर पूछा, "और क्या हो सकता
है?"

---

१. समुद्र-यात्रा में पहले-पहल यात्रियों को प्रायः जहाज डगमग
रहने से उबकाई आने लगती है। अक्सर तीन-चार दिन तक ऐसी हाल
रहती है। इसे "सी-सिकनेस" अर्थात् "समुद्री बीमारी" कहते हैं।

"जहाज टूटकर डूब भी सकता है।" डेविड ने बताया।

यंग का चेहरा पीला पड़ गया। उसने काँपती हुई आवाज में पूछा, "तब हम लोग कहाँ जाएँगे ?"

जान खिलखिलाकर हँस पड़ा, "जहन्नुम में।"

यंग और भी उदास हो गया।

डेविड ने गौर किया—जान कितना साहसी और निर्भीक है! सिर पर तूफान खड़ा है, मगर इसके चेहरे पर जरा भी घबराहट नहीं। कैसी बेफिक्री से बातें कर रहा है! यंग तो तूफान का नाम सुनते ही अधमरा हो गया!

जान का उत्तर सुनकर डेविड मुस्करा पड़ा। कैसी माकूल बात कही है इसने! सचमुच, अगर जहाज डूब गया, तो हमें जहन्नुम के सिवा और कहाँ जगह मिलेगी। उसने हँसकर कहा, "बड़ी पते की बात कही, जान! शाबाश!"

एकाएक कोलाहल बढ़ गया। खतरे का घण्टा और भी जोरों से बजने लगा। मल्लाहों की दौड़-धूप से सारा जहाज काँपने लगा। अब तक हवा के तेज झोंके आ पहुँचे थे। उनके थपेड़े खाकर समुद्र की लहरें मचल उठी थीं। हवा और पानी दोनों धक्के पर धक्के दे रहे थे—वाटरकिंग स्थिर न रह सका, वह तेजी से डगमगाने लगा।

तूफान का वेग बढ़ता ही गया। हवा के झोंके ऐसे लगते थे, जैसे कोई पहाड़ उखड़कर आ गिरा हो। लहरें बीस-बीस फुट ऊँची उठने लगीं। चारों ओर भयंकर कोलाहल मचा हुआ था—प्रलय-सा आ गया।

थोड़ी दूर पर एक टापू दिखाई पड़ रहा था। कप्तान ने सोचा, उसी के पास चलकर लंगर डाल दिया जाए। तूफान रुकने पर आगे बढ़ेंगे।

उसने मल्लाहों को हुक्म दिया, "दाहिनी तरफ बढ़ो। टापू

दिखाई पड़ रहा है, वहीं ठहरना होगा।"

वाटरकिंग हवा के झोंकों और लहरों के थपेड़ों से लड़ता हुआ टापू की ओर बढ़ने लगा। मल्लाहों ने सावधानी के लिए इन्जन तेज करके रफ्तार कुछ बढ़ा दी, ताकि पानी की गहराई कम हो, तो भी जहाज टापू के पास तक पहुँच जाए।

लेकिन वह वास्तव में टापू नहीं था, शिकारी के जाल का दाना था। जैसे शिकारी चिड़ियाँ फँसाने के लिए जाल बिछाता है और उसमें दाने डाल देता है, उसी प्रकार उस तूफान भरे महासमुद्र में मृत्यु ने वह टापू पैदा कर दिया था। वाटरकिंग शरण पाने के लिए तेजी से उसी की ओर बढ़ा, लेकिन आधी दूर पहुँचते ही वह डगमगाकर तिरछा हो गया। उसका एक-तिहाई भाग डूब गया।

मल्लाहों ने जीतोड़ कोशिश की, लेकिन जहाज फिर सीधा न हो सका। पानी में छिपी किसी पहाड़ी चट्टान से टकरा जाने के कारण उसका पेंदा फट गया था। उसी के धक्के से वह तिरछा हो गया था।

एकाएक इन्जन से आग की लपटें उठने लगीं। शायद तेल की टंकी फट गई थी। देखते ही देखते महाप्रलय का दृश्य उपस्थित हो गया।

आँधी, पानी और आग तीनों ने इतने भयंकर रूप में वाटरकिंग पर आक्रमण किया कि उसकी ठठरी बिखर गई। तख्ते और मस्तूल उखड़ गए। यात्री-दल चीत्कार कर रहा था।

कप्तान ने सुरक्षा नौकाएँ खुलवा दीं। जिसे जिधर राह मिली, भाग निकला। कौन कहाँ है, इसका किसी को पता नहीं था। कुछ देखने-सोचने का समय भी नहीं था। सबको अपनी-अपनी जान के लाले पड़े थे।

डेविड ऐसी अनेक दुर्घटनाएँ देख चुका था। उसके पास दो ट्यूब थे। झटपट निकालकर उसने एक में जान को बांधा, दूसरे में यंग को; फिर उन्हें एक लम्बी रस्सी के सहारे अपनी कमर से जोड़ लिया और स्वयं एक लम्बे पटरे के साथ पानी में कूद पड़ा। साथ में उसकी तलवार और बन्दूक थी, बस। कौन किधर है, बिना यह देखे-सोचे, वह टापू की दिशा का अनुमान करके तैरने लगा।

तूफान का वेग बढ़ता ही जा रहा था। एक घण्टे तक जूझने और छटपटाने के बाद वाटरकिंग ने समुद्र में समाधि ले ली। लाखों रुपयों का सामान और सैकड़ों यात्री असहायों के समान मौत के मुँह में समा गए। कुछ लोग नावों और पटरों के सहारे समुद्र में उतर पड़े थे, लेकिन उनका ठीक पता न था कि किधर गए—डूबे या बचे ?

संयोगवश, तूफानी ज्वार की लहरों ने डेविड को उधर ही फेंका, जिधर टापू था। तैरता-भटकता वह किनारे तक जा पहुँचा। लेकिन काफी देर तक तूफान से जूझते रहने के कारण तीनों अचेत हो गए। वे कब तक वैसे ही पड़े रहे, इसका उन्हें पता नहीं चला। यहां तक कि सारी रात बीत गई।

दूसरे दिन सवेरे जब सूरज की किरणों ने कुरेदा, तब डेविड की नींद टूटी। उसने आँखें खोलीं। उठकर देखा, तो दंग रह गया। कल के तूफान का भयानक दृश्य उसकी आँखों में तैर गया। वह रोमांचित हो उठा।

उसने एक अँगड़ाई ली। उसकी दृष्टि सामने पड़ी। दूर पर एक नाव उलटी पड़ी थी, जिस पर कोई नहीं था। रस्सी और ट्यूब से बँधे जान और यंग भी पास ही अचेत पड़े थे। किनारे पर लहरों के साथ कुछ पटरे भी तैर रहे थे। लेकिन न तो और कोई यात्री दीख रहा था, न किसी तरह का सामान।

वाटरविंग का भी कोई चिह्न शेष नहीं था।

डेविड ने उठकर जान और यंग को टटोला। दोनों जीवित तो थे, पर थकान के कारण बेहोश हो गए थे। डेविड ने उनकी रस्सी खोली और मुंह पर पानी के छींटे देकर उन्हें होश में लाने की चेष्टा करने लगा। थोड़ी देर बाद दोनों चेत में आए। जान ने पुकारा, "चाचा! हम कहां हैं?"

उस विपत्ति के समय भी डेविड को हँसी आ गई। बोला, "राबिन्सन क्रूसो के[1] के टापू में।"

जान भी मुस्करा पड़ा। पूछा, "लेकिन तब आपका "फ्राइडे"[2] कहां है?"

"यह रहा।" कहकर डेविड ने यंग की पीठ पर हाथ रखा।

तीनों हँसने लगे।

कुछ स्वस्थ होने पर डेविड ने उसी नाव को सीधी करके पानी में तैराया। आगे की यात्रा का प्रश्न था, क्योंकि उस निर्जन टापू में पड़े रहने पर तो जीवित रहना सम्भव नहीं था। वह तो रेत का ढेर मात्र था, बस। न कोई जीव-जन्तु, न पेड़-पौधा। चारों ओर ऊसर जैसा मैदान।

डेविड की कमर में उसका थैला बंधा था। मोमजामे पर बना नक्शा निकालकर देखा तो पता चला कि दस-पन्द्रह मील आगे बढ़ने पर आबादी मिल सकती है। उसने पतवार संभाली और नाव को उसी ओर खे चला। जान और यंग भी बारी-बारी से डांड चलाने लगते थे। समुद्र शान्त था। न कोई

१. इसी नाम के उपन्यास का नायक जो कई वर्ष तक अकेले ही एक निर्जन द्वीप में रहा था।

२. 'राबिन्सन क्रूसो' का एक पात्र।

...ल, न कोई शंका ।

डेविड का अनुमान ठीक निकला । कोई बारह मील उत्तर ओर चलने के बाद किनारे पर कुछ झोंपड़े दिखाई दिए । उन्होंने नाव मोड़ दी और थोड़ी ही देर में एक छोटे से गाँव के पास जा उतरे । पूछने पर पता चला कि तीन मील आगे एक छोटा-सा बन्दरगाह है, जहाँ से अदन और हिन्दुस्तान के लिए जहाज मिल सकते हैं ।

तीनों यात्रियों ने वहाँ ठहरकर कुछ खाया-पिया और एक घण्टे तक आराम करते रहे । तीन बजे उन्होंने नाव फिर आगे बढ़ाई । इस बार वे तरोताजा थे । नाव तीर की तरह चल रही थी । एक घण्टे से भी कम समय में वे बन्दरगाह पर पहुँच गए ।

तीनों यात्रियों को जैसे नया जन्म मिला । नए जहाज पर स्थान मिल जाने के उत्साह में वे अपनी सारी विपत्ति भूल गए थे ।

तीसरे दिन जहाज अदन पहुँच गया और वहाँ से चलकर चौथे ही दिन वे तीनों बम्बई पहुँच गए । जान का सुनहरा सपना पूरा हुआ । उसे इतनी खुशी हुई, मानो उसे संसार भर का खजाना मिल गया हो । तीनों बम्बई की सड़कों पर घूमते रहे ।

शाम को वे एक होटल में रुके । थकान के कारण सारी देह टूट रही थी । रात को गहरी नींद आई ।

अगला दिन भी बम्बई की सड़कें नापने में ही बीत गया । रात फिर उसी होटल में कटी । वैसा ही भोजन, वही पलंग ।

डेविड के कुछ मित्र बम्बई में रहते थे । एक दिन वह उनसे मिलने चला गया । साथ में पेन भी था । होटल में जान अकेला रह गया । वह एक उपन्यास पढ़ रहा था । पुस्तक इतनी रोचक थी कि अधूरी कहानी छोड़ने को जी नहीं चाहता था । इसीलि...

उसने डेविड से क्षमा मांग ली और उसके चले जाने पर फिर तल्लीन होकर उपन्यास पढ़ने लगा।

सुबह चाय पीकर बैठा दोपहर तक पढ़ता रहा। बारह बजे बैरे ने आकर उससे पूछा, "महाशय, क्या आपका खाना यहीं लाऊँ ?"

तब जान की चेतना लौटी। पुस्तक बन्द करके अँगड़ाई लेते हुए उसने उत्तर दिया, "हाँ, ले आओ।"

भोजन के बाद जान नीचे उतरा। कई घण्टे बैठे-बैठे देह जकड़-सी उठी थी। सोचा, थोड़ा घूम लूँ। वह सड़क पर टहलने लगा—कभी आगे, कभी पीछे। थोड़ी दूर पर एक पार्क था। वह उधर ही बढ़ चला।

पार्क में एक बेंच पर बैठकर वह सामने खड़े सरो के पेड़ की ओर देखने लगा। इस समय उसका मन बिल्कुल निर्मल था—न कोई चिन्ता, न विकार। वह सहज भाव से सरो की ओर न जाने कब तक देखता रहा।
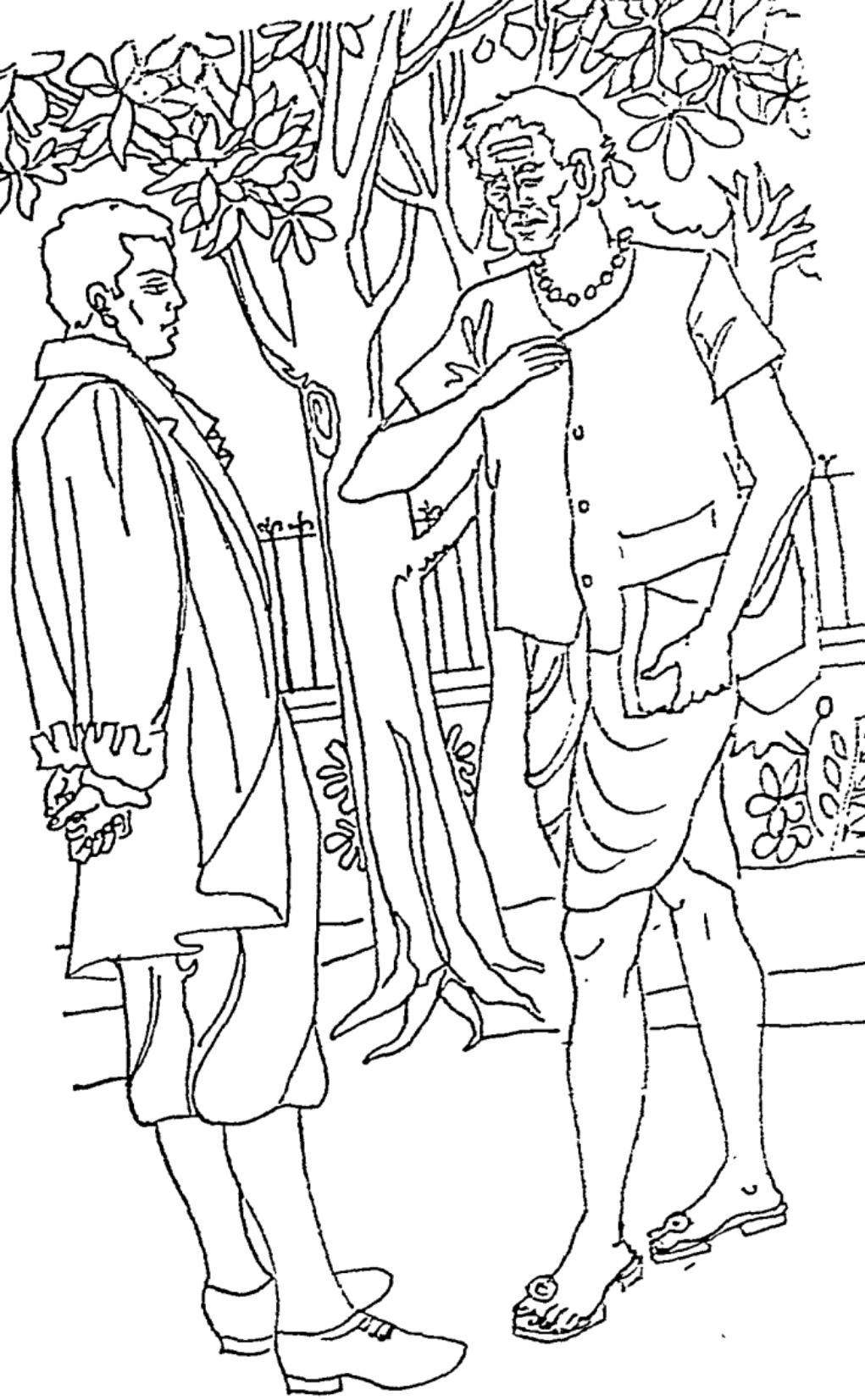
थोड़ी देर बाद एक आदमी आया। उसकी अवस्था साठ से ऊपर ही होगी—खिचड़ी बाल, रूखा चेहरा, गले में माला, माथे में चन्दन, पैरों में खड़ाऊँ और हाथ में बस्ता, जिसमें शायद कोई पोथी होगी। उसने जान के पास आकर अंग्रेजी में कहा, "साहब ! आप तो हमारे राजा है, कुछ दया कर दीजिए।"

एक मैले-कुचैले भिखारी से दीख रहे हिन्दुस्तानी के मुंह से अंग्रेजी सुनकर जान चौंक पड़ा। उसने पूछा, "कौन हो तुम ?"

"भिखारी हूँ, और क्या बताऊं, साहब !"

"क्या करते हो ?" जान ने फिर प्रश्न किया।

"भगवान का भजन और भीख मांगना, कुल यही

काम हैं।"

"अंग्रेजी कहाँ सीखी ?"

"अंग्रेजों का राज है ही, अब हिन्दुस्तान में अंग्रेजी सीखना कोई बहुत बड़ी बात नहीं रह गई।"

"अच्छा! और कुछ जानते हो ?" जान उसके उत्तर से प्रसन्न और चकित होकर बोला।

"अपनी संस्कृत भाषा जानता हूँ। हिन्दी और बँगला भी जानता हूँ। वैद्यक तथा ज्योतिष का भी अध्ययन किया है, लेकिन हूँ तो भिखारी ही।"

"क्यों ?"

"भाग्य की लीला कहिए, और क्या ?"

"अरे, तुम ज्योतिषी होकर भी भाग्य की लीला के चक्कर में पड़े हो। तुम अपना भाग्य नहीं जानते ?"

"जानता हूँ। अपना जानता हूं, आपका भी जानता हूं। लेकिन उसे बदल तो नहीं सकता।"

"बताओ, मेरा भाग्य कैसा है ?" जान उत्सुक होकर बोला।

ज्योतिषी ने कुछ देर तक उसकी हथेली देखी, फिर बोला, "आपको जीवन भर भटकना पड़ेगा, साहब! विद्या और यश तो बहुत मिलेगा; लेकिन मन को चैन नहीं मिल सकता। जिन्दगी भटकते ही बीतेगी।"

जान की आँखें फैल गईं। बोला, "सच कहना, बाबा! तुम्हें कैसे पता चला ?"

"मैंने बताया न। ज्योतिष के सहारे सब कुछ जाना जा सकता है, लेकिन होनहार को बदला नहीं जा सकता।"

जान दंग रह गया। हाथ जोड़कर बोला, "यह विद्या मुझे भी सिखा दोगे ?"

ज्योतिषी फीकी हँसी हँसा, "आप गोरा लोग भला इसे क्यों सीखेंगे ? आपको तो राज-रियासत से मतलब है। हिन्दुस्तान की गाय मिल गई है, उसी को दुहते रहिए। यह विद्या बड़ी झंझटी है। आप भिखारी बनकर क्या करेंगे। अपनी पल्टन में जाकर कर्नल-वर्नल हो जाइए।"

उस दीन-दरिद्र भिखारी के साथ यह सारा वार्तालाप अंग्रेजी में हो रहा था।

जान उसके व्यक्तित्व से बड़ा प्रभावित हुआ। उसने भिखारी के पैरों पर माथा टेक दिया और लगभग गिड़गिड़ाकर बोला, "मुझे आप यह विद्या सिखा दीजिए; आप जो कहेंगे वही करूँगा।"

भिखारी मुस्कराया, "मैं द्रविड ब्राह्मण हूँ। यह विद्या सीखने के लिए आपको हिन्दुस्तानी बनना पड़ेगा। मेरे साथ भटकना पड़ेगा। भीख माँगनी पड़ेगी। माँस-मदिरा आदि के व्यसन छोड़ने पड़ेंगे। अंग्रेजी समाज और उसके जैसा रहन-सहन—सभी कुछ छूट जाएगा। आप क्या मेरी तरह फटे-पुराने कपड़ों में, नंगे पैरों दर-दर की ठोकर खा सकेंगे ?"

"मैं सब कुछ करने को तैयार हूँ ! आप मुझे किसी भी कीमत पर यह विद्या सिखा दीजिए।" जान ने उसके पाँव पकड़ लिए।

"फिर सोच लीजिए ! आज तो आप भगवान के पद पर हैं। कहते हैं—अंग्रेज सरकार के राज में सूरज नहीं डूबता। भगवान् का वेष छोड़कर भिखारी बनना बड़ा कठिन है। राव से रंक होने के लिए कोई तैयार नहीं होता।"

"लेकिन मैं वह सब करूँगा। आप तनिक भी चिन्ता न करिए। मेरा आगे-पीछे कोई नहीं है। मैं तो अपने देश से ज्ञान की खोज में ही भाग आया हूँ। यहाँ भी मेरा न तो कोई

रिश्तेदार है, न मित्र। अकेला ही एक होटल में ठहरा हूँ।"

भिखारी ने उसकी ओर गहरी निगाह डाली। क्षण भर जैसे उसे तौलता रहा, फिर बोला, "सोच लो, अगर ब्राह्मण बनकर पाँच वर्ष तपस्या कर सको, तो ज्योतिष या वैद्यक सीख जाओगे। फिर किसी के विषय में सहज ही सब कुछ बता सकोगे।"

"पाँच नहीं, दस वर्ष करनी पड़े तो मैं दस वर्ष भी तपस्या कर लूँगा, महाशय!" जान ने उसके सामने समर्पण कर दिया।

"तब चलो।" कहकर ब्राह्मण ने उसकी पीठ पर हाथ फेरते हुए उसे उठाया। जान वैसे ही, उन्हीं कपड़ों में, उसके साथ चल पड़ा। फिर उसने न तो मुड़कर होटल की ओर देखा, न यही सोचा कि डेविड और यग लौटकर क्या सोचेंगे?

⊙

उस द्रविड ब्राह्मण का नाम था गोविन्द राघवन्। वह शीघ्र ही जान की प्रतिभा, तेजस्विता और लगन को समझ गया। उसने जान को साथ ले जाकर अपने आश्रम में रखा और उसे भारतीय धर्म-कर्म की रीति समझाने-सिखाने लगा।

जान का मन रम गया। राघवन का अंग्रेजी-ज्ञान बड़ा उपयोगी सिद्ध हुआ। उसने जान को हिन्दी और संस्कृत पढ़ाना शुरू किया।

जान बुद्धिमान तो था ही, चमत्कार और ज्ञान के लोभ में वह उत्साहपूर्वक सब कुछ सीखने लगा। अंग्रेजियत और मास-मदिरा की बात वह भूल ही गया। पाँच महीने बीतते-बीतते वह हिन्दी में अच्छी तरह लिखने बोलने लगा। तब राघवन् ने उसे विधिपूर्वक दीक्षा देकर अपना शिष्य बना लिया और दूसरे दिन से उसे ज्योतिष पढ़ाने लगा।

धीरे-धीरे आठ वर्ष बीत गए। जान ई० वार्नर बम्बई से मद्रास, चिदम्बरम्, मदुरा, उज्जैन और पुरी आदि स्थानों में भटकता रहा। राधवन् के अतिरिक्त उसने और भी कितने ही पण्डितों, साधू-संन्यासियों और विद्वानों की सेवा की।

उन दिनों वह बिल्कुल हिन्दू बना रहा। उसने मांस-मदिरा का सर्वथा त्याग कर दिया था। ब्रह्मचारियों की भाँति वह तड़के उठकर नहाता; ईश्वर का ध्यान करता; व्यायाम करता; फिर ब्राह्मी की ठण्डाई पीकर अध्ययन-मनन में जुट जाता था। संस्कृत, अंग्रेजी, हिन्दी और तमिल वह अच्छी तरह लिख-पढ़ लेता था। ज्योतिष के लिए जान तन-मन से सारी तपस्या कर रहा था!

वह लगातार भ्रमण करता रहा। विन्ध्याचल, सतपुड़ा, पच्छिमी घाट आदि पहाड़ों की गुफाओं में रहने वाले कितने ही साधुओं-पण्डितों के पास रहकर भी जान ने ज्योतिष विद्या सीखी। कभी भूखों रहना पड़ा, कभी कंकड़ों पर सोना पड़ा। कभी दुत्कार-फटकार तक सहनी पड़ी; परन्तु जान डिगा नहीं। वह उसी लगन से जुटा रहा।

अन्त में उसकी साधना सफल हो गई। उसे हस्तरेखाओं का पूरा ज्ञान प्राप्त हो गया। किसी का भी हाथ देखकर वह उसके भूत-भविष्य के विषय में बहुत कुछ बता सकता था। यहाँ तक कि उसके गुरु, वे भारतीय पण्डित और विद्वान् भी उसकी भविष्यवाणियों पर तथा ज्ञान पर आश्चर्य करने लगे, जिनके पास रहकर उसने यह विद्या सीखी थी।

लगा रहता था या जो स्कूल जाकर रास्ते से ही लौट आता था और दिन भर गलियों में छिप-छिपाकर खेला करता था।

इन आठ वर्षों में जान ने दक्षिण भारत की खूब सैर की। सैकड़ों मठ-मन्दिर देखे; पण्डे-पुजारियों से मिला। राजा-रथी देखे; गुरु-शिष्य, दान-धर्म देखा और भारत के कितने ही रीति-रिवाजों का परिचय प्राप्त किया। ठीक नवें वर्ष के आरम्भ में उसने अपने गुरु राघवन् से विदा माँगी, "गुरु जी! अब मुझे आज्ञा दीजिए, स्वदेश जाऊँगा।"

गोविन्द ने उसकी पीठ पर हाथ फेरकर आशीर्वाद दिया, "चिरंजीवी हो! इस विद्या का दुरुपयोग न करना और न हर एक को इसे सिखाते फिरना। यह बड़ा ही गूढ़ और गुप्त विषय है। मेरा आशीर्वाद है—इससे तुम्हें अतुल कीर्ति मिलेगी।"

जान ने उनकी पदधूलि माथे से लगा ली।

⊙

तीसरे दिन—

जान बम्बई के बन्दरगाह में खड़े 'डायमंड' नामक जहाज पर बैठा हुआ था। साइरन बज रहा था और जान सोच रहा था, आठ वर्ष बीत गए! पता नहीं, चाचा डेविड और यग कहां होंगे?

३

लन्दन का माउंट स्ट्रीट—

जान ई० वार्नर अपने कमरे में बैठा फर्नीचर की ओर देख रहा था। सहसा उसके मन में प्रश्न उठा, क्या यह टूटा-फूटा फर्नीचर बदला नहीं जा सकता? क्यों न मैं कुछ धन कमा लूँ, ताकि पिकेडली जैसी जगह में रह सकूँ। आखिर जो लोग बकिंघम पैलेस और पिकेडली में रहते हैं, वे भी तो मनुष्य ही हैं। फर्क है तो सिर्फ धन का। उनके पास सम्पत्ति है, और मैं खाली हाथ हूँ। लेकिन कहाँ वह पिकेडली का स्वर्ग और कहाँ यह माउण्ट स्ट्रीट का बूचड़खाना। कितना भेद है दोनों में। गुरु राघवन् ठीक ही कहा करते थे—'सर्वे गुणाः कांचनमाश्रयन्ति।'

जान भावविभोर हो उठा। पाँच वर्ष पूर्व का भारतीय जीवन उसकी आँखों में घूम गया। वहाँ के वे सारे वन-पर्वत और गाँव-नगर उसके सामने साकार हो उठे, जहाँ वह वर्षों तक घूमता रहा था। पण्डितों के सत्संग और जंगली जातियों की असभ्यता का चित्र कल्पना में सजीव हो गया। संस्कृत की पुस्तकों के पाठ याद आ गए और कानों में गोविन्द राघवन् का स्वर गूंजने लगा—'सर्वे गुणाः कांचनमाश्रयन्ति।'

जान ने विह्वल होकर आँखें मूँद लीं और बीते हुए दिनों की याद में डूब गया।

वह न जाने कब तक आराम कुर्सी पर वैसे ही लेटा रहा।

थोड़ी देर बाद एक युवक ने कमरे में प्रवेश किया। पैरों की आहट सुनकर जान का ध्यान भंग हो गया। वह जैसे स्वप्न-लोक से धरती पर उतर आया और आँखें खोलकर उठ बैठा।

आगन्तुक हॉकर था। उसने नमस्कार करके अखबार निकाला और जान को देकर चलता बना। जान पल भर उसकी ओर देखता रहा, फिर अखबार को उठाकर उसके पन्ने उलटने लगा। सहसा उसकी दृष्टि एक समाचार पर रुक गई—

रोमांचकारी हत्या

सिटीजन लेन में खून। हत्यारे को पकड़ने के लिए सौ पौंड का सरकारी इनाम

इसके आगे हत्या का विवरण था, जिसका सारांश यह था कि कल रात किसी ने सिटीजन लेन नामक मुहल्ले के एक व्यापारी स्मिथ की हत्या कर दी और उसकी तिजोरी की सारी रकम उड़ा ले गया। पुलिस ने बहुतेरी छानबीन की, लेकिन कोई सुराग नहीं मिला। जो व्यक्ति हत्यारे का अता-पता दे सके, उसे पुलिस की ओर से पुरस्कार के रूप में सौ पौण्ड दिए जाएँगे।

यों, सौ पौण्ड कोई बहुत बड़ी रकम नहीं होती, लेकिन जिसके पास सौ शिलिंग भी न हों उसके लिए तो बड़ी रकम है ही। जान की स्थिति ऐसी ही थी। उसके पास कुछ नहीं था। यहां तक कि वह होटल का किराया चुकाने में भी असमर्थ था। स्टूडियो का किराया ज्यों का त्यों बना था। खाने की समस्या भी मुंह फाड़े सामने खड़ी थी।

उसने हत्या वाले समाचार को एक बार फिर से पढ़ा। सौ पौण्ड की रकम उसे कुछ ज्यादा ही आकर्षक लगी। थोड़ी देर सोचते रहने के बाद वह उठा

कन्धे पर डालकर एक ओर चल पड़ा।

मौसम अच्छा नहीं था। बादल छाए हुए थे। जान ने एक बग्घी वाले को बुलाकर पूछा, "ईस्ट एण्ड चलोगे ?"

"चलूँगा क्यों नहीं महाशय, मुझे पैसे से मतलब ! कहीं भी चलिए।"

जान ने किराया तय किया और पर्दा सरकाकर भीतर बैठ गया। बग्घी ईस्ट एण्ड की ओर चल पड़ी। जान सोच रहा था, यह गरीबों का मुहल्ला है। अगर यहां कोई सस्ता-सा कमरा और होटल मिल जाए, तो ठीक रहेगा।

मुकाम पर पहुँचकर बग्घी वाला रुक गया। जान ने उतरकर पैसे चुकाए और एक ओर चल पड़ा।

हवा कुछ तेज हो गई थी और सरदी भी बढ़ गई थी। जान ने ओवरकोट ओढ़ लिया और कालर खड़े करके उसमें कान छिपाने का प्रयत्न करने लगा। वह दस ही कदम चला था कि बूँदें पड़ने लगीं—पहले फुहार जैसी, फिर तेज बौछार। सड़क पर चलना कठिन था। हारकर जान एक किनारे खड़ा हो गया। वहां नई इमारत बन रही थी। आसपास कोई न था। चारों ओर सन्नाटा। जान ने दुबारा कालर ठीक किया। फिर पतलून की जेब में हाथ डालकर, दीवार के सहारे खड़ा हो गया।

ऊपर से जान शान्त था; पर उसका मस्तिष्क अशान्त था। हत्या वाले मामले का सुराग पाने की कल्पना उसे बार-बार चंचल कर रही थी। वह सोच रहा था, कितना अच्छा होता यदि मैंने ज्योतिष न सीखकर जासूसी सीखी होती। एक तरफ खाली जेब दूसरी तरफ सौ पौण्ड का पुरस्कार।

लेकिन जासूस तो गली-गली हैं। ज्योतिषी ढूंढ़ने से भी नहीं मिलते।

जान अपने-आप पर सन्तुष्ट हो गया। उसने सोचा, मुझे ज्योतिष विद्या में ही लगन के साथ जुटे रहना चाहिए। एक दिन इसी से मुझे सब कुछ सुलभ हो जाएगा। इससे बढ़कर ज्ञान और क्या होगा !

सहसा उसके कानों में गोविन्द राघवन् का उपदेश बार-बार गूंजने लगा : 'सर्वे गुणा: कांचनमाश्रयन्ति'''

जान चौंक पड़ा। गर्दन घुमाकर इधर-उधर देखा—कहीं कोई नहीं। वही सन्नाटा, वही बूंदें और वही तीखी ठण्डी हवा।

उसने मन बहलाने के लिए दीवार की ईंटों को गिनना शुरू कर दिया। जब तक पानी थम नहीं जाता, आगे जाना असम्भव था।

--पचपन, छप्पन, सत्तावन...अरे ? अट्ठावनवीं ईंट देखकर वह चौंक पड़ा। उस पर खून से भीगे हुए किसी के दाहिने पंजे की छाप बनी हुई थी। शायद किसी ने धोखे से वहाँ अपनी हथेली रख दी थी। और खून लगा होने के कारण उसकी छाप उस पर उतर आई थी। ईंट एकदम चिकनी थी इसलिए हथेली की छाप स्पष्ट उभरी थी।

जान सहमा कौतूहलवश उसे ध्यान से देखने लगा। अनेक प्रकार की रेखाएं और चिह्न बने हुए थे। उनके सहारे जान उस व्यक्ति की आयु, स्वभाव, रुचि और रूप-रंग का अध्ययन करने लगा। एकाएक उसकी आंखें फैल गईं, "अरे, अपोलो पर क्रास ! इतना मोटा अगूंठा और छिगुनी इतनी टेढ़ी। यह तो बहुत ही भयंकर हत्यारा है।"

उसने अपनी नोटबुक निकाली और दीवार पर बनी उस छाप की नकल उतार ली। छाप इतनी स्पष्ट थी कि उससे आदमी का नाम छोड़कर बाकी सारी बातों का पता चल

था।

पानी थम गया था। जान उत्साहपूर्वक लौट पड़ा। ईस्ट
ण्ड का चक्कर लगाना अब बेकार जान पड़ता था। थोड़ी दूर
र ही एक बग्घी मिल गई। उस पर बैठकर जान समीप की
पुलिस चौकी पर गया और वहां के अफसर से मिलकर बताया,
"एक लम्बा, पतला युवक, जिसकी आयु ३०-३२ के लगभग
है, मोटे, कड़े बाल, मोटी भौंहें और टेढ़ी आंखें, दाहिनी छिगुनी
टेढ़ी और अँगूठा मोटा, कुछ हकलाकर बोलने वाला, गाने
का शौकीन, नीचे का होंठ मोटा और दांत कुछ बड़े और टेढ़े
हैं, किसी की हत्या करके बेफिक्र घूम रहा है। शायद वह किसी
धनी घर का लड़का है और अपने किसी निकट-सम्बन्धी की
हत्या करके अब उसकी जायदाद हड़पना चाहता है। फौरन
तलाश कीजिए। वह भयंकर हत्यारा है।"

अफसर ने घूरकर उसकी ओर देखा और पूछा, "आपका
नाम ?"

"जान ई० वार्नर।"

"यह सारी जानकारी आपको कैसे मिली ?" अफसर ने
अविश्वासभरे स्वर से कहा।

"उसके हाथ की छाप देखकर।"

"आप हस्तरेखा-विज्ञान जानते हैं ?"

"हाँ, थोड़ा-बहुत।" जान ने नम्रता से मुस्कराकर कहा

"कहाँ सीखा ?"

"भारत में !" जान ने गर्व से बताया।

अफसर ठठाकर हँस पड़ा, "ओह !...वह गुलामों क
देश।"

"लेकिन विद्वानों का देश !" जान ने उठते हुए कहा अ
सलाम करके लौट पड़ा।

अफसर की बातचीत का ढंग उसे पसन्द नहीं आया था। वह रास्ते भर सोचता रहा, मेरे देश के लोगों में कितना अहंकार है।

माउण्ट स्ट्रीट आ गया था। अपने कमरे में पहुँचकर जान ने कपड़े बदले और आरामकुर्सी पर लेटकर गोविन्द राघवन् को दी हुई एक हस्तलिखित पुस्तक पढ़ने लगा।

तीन दिन और बीत गए।

चौथे दिन सवेरे जान को एक पत्र मिला, जिसमें लिखा था :

"प्रिय महाशय !

उस दिन आपकी सूचना पर मैंने अविश्वास किया था; पर बाद में उसी के सहारे एक ऐसे अपराधी का पता चला, जिसकी खोज में लन्दन की पुलिस परेशान हो चुकी थी। अन्त में वह युवक पकड़ लिया गया। सचमुच आपकी विद्या में अद्भुत क्षमता है। युवक का हुलिया हूबहू वही है, जो आपने बताया था। उसने स्वयं अपने पिता की हत्या की थी और पुलिस की आंखों में धूल झोंककर ठाठ से घूम रहा था। सिटीजन लेन वाली हत्या का अपराधी वही है। मैं आपको इस समाचार के साथ बधाई देता हूँ कि आपको सौ पौण्ड का सरकारी तथा सौ पौण्ड का एक विशेष पुरस्कार भी दिया जाएगा।

भवदीय

विलियम फ्लैंग।"

जान प्रसन्नता से उछल पड़ा। उसकी सारी चिन्ता और थकान हवा हो गई। अलमारी में रखी अपनी पुस्तकों को उत्साह के साथ सिर झुकाकर उसने आकाश की ओर देखा और मन ही मन प्रार्थना करने लगा, "ओ ईश्वर, मेरी सहा-

नाम तक बदल डाला। उसने डायमण्ड पार्क के पास एक छोटा-सा शानदार बंगला लिया और उसके फाटक पर साइन-बोर्ड लगाया :

प्रोफेसर कीरो

हस्तरेखा विशेषज्ञ

आइए और अपनी हस्तरेखाओं के आधार पर
अपने वर्तमान और भविष्य की प्रामाणिक
जानकारी प्राप्त कीजिए !

अंग्रेजों की एक विशेषता है—वे ज्ञान की खोज में तुरन्त दौड़ पड़ते हैं। कीरो के साइन-बोर्ड ने सारे लंदन में धूम मचा दी। यों, हस्तरेखा-विज्ञान यूरोप में था; पर बहुत ही कम। मुख्य रूप से जर्मनी की जिप्सी जाति के लोगों में ही इसका प्रचार था।[1] सभ्य कहे जाने वाले आधुनिक विज्ञान के समर्थक इसे निरीधूर्त-विद्या कहते थे।

लन्दनवासियों का कौतूहल जागा। अखबारों में कीरो के विषय में छपे समाचार उन्हें और भी चकित कर रहे थे। फलतः कीरो के बंगले पर सुबह-शाम जिज्ञासुओं की भीड़ लगी रहती थी। जैसे बाढ़ के दिनों में नदी का जल बढ़ने लगता है, ठीक उसी प्रकार कीरो का यश भी चारों ओर फैलने लगा।

उसकी बताई हुई बात इतनी सही उतरती थी कि लोग उसकी प्रतिभा के कायल हो जाते थे। एक साल पूरा होते-होते

---

१. जिप्सी : जर्मनी की एक पुरानी खानाबदोश जाति, जिनके पुरुष बहु-धन्धी होते हैं और स्त्रियाँ प्रायः घरों में जाकर जंगली जड़ी-बूटियाँ बेचती हैं तथा हस्तरेखाएं पढ़ती हैं। यह आश्चर्यजनक सत्य है कि वे स्त्रियां पढ़ी-लिखी नहीं होती पर उनकी भविष्यवाणी की सचाई देखकर दंग रह जाना पड़ता है।

ही होते थे। 'यह एक विचित्र बात थी कि उसकी बताई हुई बातें लगभग सोलहों आने सही उतरती थीं।

एक दिन एक दुबला-पतला युवक कीरो के पास आया। नाम था जेनर। उसने कहा, "महाशय ! मेरे पास आपको फीस देने के लिए एक पेंस भी नहीं है। लेकिन आप मेरा हाथ देखकर कुछ बताने की कृपा करें—मैं बदले में आपके बँगले में दो दिन माली का काम कर दूँगा।"

कीरो उसकी दीनता पर पिघल गया। बोला, "माली का काम मैं तुमसे न लूँगा ; लेकिन क्या तुम मेरे कथन पर विश्वास कर सकोगे?"

"उसी के लिए तो आया हूँ, श्रीमान !" युवक बोला।

"लाओ, देखें।"

युवक ने हाथ आगे बढ़ा दिया।

कीरो ने गौर से उसकी हथेलियाँ देखीं फिर एक क्षण रुककर बोला, "दोस्त ! आज तो तुम अपनी गरीबी से ऊबकर आत्महत्या करने की बात सोच रहे हो; लेकिन मेरी सलाह मानो, सिर्फ दो हफ्ते और सब्र के साथ ये परेशानियाँ झेल लो। मेरा खयाल है, इस बीच तुम्हें कहीं से विरासत में भारी-भरकम रकम मिलने वाली है। उसके बाद तुम्हारा सारा संकट दूर हो जाएगा।"

युवक सचमुच गरीबी से पीड़ित था। कीरो की बात सुनकर उसकी आँखें फैल गईं। विश्वास नहीं हो सका। बोला, "लेकिन मेरा तो कोई ऐसा रिश्तेदार भी नहीं है, जिसका भरोसा कर सकूँ ! मुझे किसकी विरासत मिलेगी ? दुनिया में मेरा कोई नहीं।"

"खैर, दो-तीन हफ्ते इन्तजार कर लेने में क्या हर्ज है। मेरा खयाल है, उसके बाद तुम लखपती हो जाओगे।" कीरो ने तस-

"आपकी बातें भगवान के मुँह से निकली थीं, श्रीमान !"

"जाओ, आनन्द करो, मित्र, आखिर तुम्हारे दिन फिरे।"

"मेरी यह तुच्छ भेंट स्वीकार कीजिए!" कहकर युवक ने हाथीदाँत की सन्दूकची खोली।

कीरो देखकर चकित रह गया—उसमें हीरे की एक कीमती अंगूठी और पाँच सौ पौण्ड रखे थे। उसने युवक की पीठ पर हाथ रखते हुए मुस्कराकर कहा, "भाग्यशाली भी हो और बुद्धिमान भी।"

जेनर और पाउला उसे सादर नमस्कार करके लौट पड़े।

डायमण्ड पार्क में आते ही कीरो की कीर्ति सारे यूरोप में फैल गई थी। उसकी आश्चर्यजनक भविष्यवाणियों ने दूर-दूर के देशों में तहलका मचा दिया। लोग एकबारगी भाग्य और भगवान के प्रति झुक गए। यह कहा जा सकता है कि यूरोप में फैली नास्तिकता को कीरो के ज्योतिष-ज्ञान ने करारी ठोकर दी। लोगों को विश्वास हो गया कि एक ऐसी शक्ति भी संसार में है जो दिखाई तो नहीं पड़ती, लेकिन सृष्टि के सारे कारोबार पर अपना अंकुश रखती है।

सभ्यता की दौड़ में यूरोप के कई देश आगे रहे हैं। उनमें इंगलेण्ड प्रमुख था। पर दूसरे देश भी निष्क्रिय नहीं थे—जर्मनी, फ्रांस और इटली भी उससे टक्कर लेने के उपाय करते रहते थे। उन दिनों अमेरिका और इंगलैण्ड के बीच भी बड़ी प्रतिस्पर्धा चल रही थी। ज्ञान-विज्ञान, फैशन और सम्पत्ति में दोनों लगातार एक-दूसरे को नीचा दिखाने का प्रयत्न करते रहते थे।

एक दिन कीरो के मन में विचार उठा—यूरोप के देशों में तो मेरा नाम फैल ही गया है अब किसी और महाद्वीप की सैर करनी चाहिए। अमेरिकनों को अपने वैभव और सभ्यता पर बड़ा नाज है। उन्हें भी दिखा दूं कि इंगलैण्ड में कैसे-कैसे लोग रहते हैं।

सम्मान और यश की आकांक्षा बड़ी
उसके साथ धन भी मिल रहा हो, तो क्या

ने यात्रा का निश्चय कर लिया। चौथे दिन ही वह अमेरिका जाने वाले एक जहाज पर बैठ गया। भारत के बाद यह कीरो की दूसरी समुद्र-यात्रा थी। ऊँची-ऊँची लहरों को कुचलता-रौंदता 'हाई स्पीड' नामक जहाज अमेरिका की ओर बढ़ रहा था। और उसके साथ ही कीरो का मन भी कल्पनाओं के महासागर पर तैरता हुआ चल रहा था।

एक सुहावनी सन्ध्या को जहाज ने अमेरिका के प्रसिद्ध नगर 'न्यूयार्क' के बन्दरगाह में लंगर डाला। कोलम्बस की खोजी हुई नई दुनिया की धरती पर यह कीरो का सर्वप्रथम पदार्पण था। लेकिन उसे न कोई चिन्ता थी, न संकोच। एकदम नए वातावरण में पहुँच जाने पर भी उसके चेहरे पर घबराहट का एक भी चिह्न नहीं था। होंठों पर सहज गम्भीरता, आँखों में वही गहरे पैठने वाली रहस्य भरी चमक और माथे पर दृढ़ निश्चय की रेखाएँ। अपरिचित वातावरण से उत्पन्न होने वाली अस्थिरता उसके चेहरे पर लेश मात्र भी न थी। अटूट आत्म-विश्वास के साथ उसने कुली बुलाया और एक गाड़ी पर सामान रखवाकर शहर की ओर चल पड़ा।

न्यूयार्क बहुत बड़ा नगर है। संसार भर में लन्दन प्रथम और न्यूयार्क द्वितीय माना जाता है। जनसंख्या, उद्योग-धन्धे, वैभव-विलास की दृष्टि से ये दोनों नगर संसार में बेजोड़ हैं। कीरो लन्दन का निवासी था। उसमें झेंप या झिझक बिल्कुल नहीं थी—न्यूयार्क जैसे उसके लिए साधारण-सा शहर हो। वह निर्द्वन्द्व भाव से बैठा आगे का कार्यक्रम सोचता रहा।

गाड़ी फिफ्थ एवेन्यू नामक स्ट्रीट में जाकर रुकी। कोचवान ने कहा, "ऊपर कमरे खाली होंगे, श्रीमान ! देख लीजिए, मिल जाए तो ठीक, वरना आगे चलूँ।"

कीरो गाड़ी से उतरा। सामने की भव्य इमारत पर दृष्टि

पड़ते ही वह चकित रह गया। इतना ऊँचा भवन उसने कभी न देखा था—लन्दन में भी नहीं। इमारत की चोटी मानों आकाश छू रही हो। कीरो ने फाटक पर बैठे सिपाही से पूछा, "कमरा मिल सकेगा ?"

"हाँ श्रीमान्, खूब शानदार ! कई सुसज्जित कमरे खाली हैं।"

"देखना चाहता हूँ।" कीरो ने कहा।

"वह बगल के कमरे में लिफ्ट लगी है।" सन्तरी ने रास्ता दिखा दिया।

कीरो ने सामान उसी की निगरानी में छोड़ा और लिफ्ट की ओर चल पड़ा।

कमरे सचमुच बड़े शानदार थे। पंखा, रोशनी, हीटर और नल—सब कुछ था। किराया भी काफी शानदार था, लेकिन कीरो को इसकी अधिक चिन्ता न थी। उसने एक बढ़िया आरामदेह कमरा पसन्द कर लिया।

दूसरे दिन समाचार-पत्रों में बड़े अच्छे ढंग से एक विज्ञापन प्रकाशित हुआ :—

"ज्योतिष विद्या के करिश्मे देखने के लिए कार्लटन होटल में इंगलैण्ड के प्रसिद्ध हस्तरेखा विशारद प्रफेसर कीरो से मिलिए।"

कीरो स्वयं तो अमेरिका के लिए अजनबी था; पर उसका नाम अजनबी नहीं था। यूरोप की सीमाएँ पार करके उसकी ख्याति पहले ही वहाँ पहुँच चुकी थी। न्यूयार्क के कई समाचार-पत्रों में उसके विषय में अनेक प्रकार की अच्छी-बुरी [illegible] टिप्पणी भी प्रकाशित हो चुकी थी। न्यूयार्कवासी उसके [illegible] मन का समाचार पाते ही उससे मिलने को उतावले हो [illegible] कुछ को उस पर विश्वास था, कुछ को अविश्वास

सभी को था। लोग सोचते थे, आखिर उसकी भविष्यवाणी सच कैसे हो जाती है ?

अमेरिकनों में लन्दनवासियों के प्रति उपेक्षा और अहं का भाव अधिक रहता था। अधिकांश लोग कीरो को नीचा दिखाने की सोच रहे थे। उन्हें यह सह्य नहीं था कि एक विदेशी व्यक्ति हमारे यहाँ आकर अपना इतना गहरा प्रभाव डाल सके। इन लोगों ने इधर-उधर दौड़-धूप करके एक दल बनाया और निश्चय किया कि किसी भी तरह इस अंग्रेज ठग का परदाफाश कर दिया जाए।

न्यूयार्क का प्रसिद्ध दैनिक पत्र 'न्यूयार्क वर्ल्ड' तब भी निकलता था। इसकी गणना संसार के सबसे बड़े और पुराने पत्रों में होती है। कुछ अमीरों और प्रभावशाली अफसरों ने 'न्यूयार्क वर्ल्ड' के मालिक से मिलकर बातचीत की। तय किया गया कि इस महत्वपूर्ण समाचार-पत्र की ओर से कीरो की कठिन परीक्षा ली जाए।

उस दिन शुक्रवार था। कीरो नित्यकर्म से छुट्टी पाकर अपने कमरे में आ बैठा। इसी समय वह लोगों से मिलता था। थोड़ी देर बाद नौकर ने एक मुलाकाती कार्ड लाकर उसकी मेज पर रखा। कीरो ने उठाकर देखा—मिस डोरा रदरफोर्ड।

एक मिनट तक कार्ड को उलट-पुलटकर देखने के बाद कीरो ने नौकर से कहा, "बुला लाओ।"

नौकर चला गया।

थोड़ी ही देर में एक चपल सुन्दरी ने कमरे में प्रवेश किया। चाल-ढाल और रूप-रेखा से वह बहुत ही निश्चिन्त लग रही थी। फुर्ती और चालाकी उसकी नस-नस मे भरी हुई थी। उसकी लहराती हुई देह बता रही थी कि यह किसी

को भी न.टकीय ढंग से वशीभूत कर सकती है।

कमरे में प्रवेश करते ही वह आधे क्षण को ठिठकी। वातावरण में व्याप्त अगरू और धूर की सुगन्ध उसे कुछ विचित्र-सी जान पड़ी। इसके पहले उसने ऐसी गन्ध कभी नहीं पाई थी।

कीरो अपने भारतीय गुरु गोविन्द राघवन् के आदेशानुसार नियमों के अनुसार नित्य सवेरे अपने ग्रन्थों को धूप से सुवासित किया करता था। ग्रन्थों की पूजा के लिए वह खास तौर पर मैसूर से शुद्ध चन्दन और कस्तूरी से बनी हुई धूपवत्तियाँ मँगाया करता था।

युवती ने एक पग और बढ़ाया। उसकी चंचल-चौकन्नी निगाहें दो सेकण्ड में ही सारे कमरे का निरीक्षण करके कीरो के चेहरे पर जम गईं। उसने देखा, सामने कुर्सी पर बैठा प्रियदर्शी अंग्रेज युवक बड़ी शालीनता के साथ उठकर कह रहा है, "आइए, साभार आपका स्वागत है।"

युवती अभिवादन करके कुर्सी पर बैठ गई। उसकी आँखें युवक की आँखों की थाह लेने लगीं—क्या यही वह विलक्षण ज्योतिषी है, जिसका नाम सारे यूरोप और अमेरिका में गूँज रहा है? यह तो अभी नवयुवक ही है। इतनी कम उम्र में इतना गम्भीर ज्ञान कैसे? अवश्य ही यह कोई पक्का ठग है। अपनी नाटकीय, शालीनता और आकर्षक व्यक्तित्व से प्रभावित करके यह यश और धन कमाता होगा।

लेकिन कीरो उस युवती की चमक-दमक या टटोलने वाली निगाह से तनिक भी प्रभावित नहीं हुआ। उसका आत्म-बल और संयम दृढ़ था। होंठों पर वही सहज शालीनतापूर्ण मुस्कान और वही निराली रहस्यमय आँखें। उसने पूछा, "कहिए, आपकी क्या सेवा करूँ!"

युवती ने अपनी बाँहों को सहलाते हुए बिना किसी झिझक के बताया, "मेरा नाम है मिस डोरा रदरफोर्ड।"

'यह तो आपका कार्ड ही बता चुका है।" कीरो धीरे से हँस पड़ा।

डोरा जैसे पराजित हो गई। बातचीत का आरम्भ ही उसे गलत मालूम पड़ा। उसने तुरन्त संभल कर कहा, "मैं यहाँ के प्रसिद्ध दैनिक पत्र 'न्यूयार्क वर्ल्ड' में रिपोर्टर हूँ और आपकी परीक्षा लेने आई हूँ।"

"किस तरह ?" कीरो बड़ी स्थिरता से यह आक्रमण भी झेल गया।

"मैं ज्योतिष सम्बन्धी कुछ प्रश्न आपके सामने रखूंगी। यदि आप उनका उत्तर नहीं देते या गलत देते हैं, तो आपको तुरन्त अमेरिका छोड़ देना होगा। और अगर आप मेरे प्रश्नों के सही उत्तर देते हैं, तो 'न्यूयार्क वर्ल्ड' में आपका प्रचार मुफ्त किया जाएगा। आप जानते होंगे कि हमारे पत्र की ग्राहक-संख्या कई लाख है और उसमें छपने वाले एक कालम इंच के विज्ञापन का मूल्य भी कई डालर होता है। बोलिए, आपको मेरी चुनौती स्वीकार है ? क्या आप इस अग्नि-परीक्षा के लिए तैयार हैं ?"

कीरो ने गम्भीर दृष्टि से थोड़ी देर तक उसकी ओर देखा, फिर उसी प्रकार सहज-शान्त स्वर में उत्तर दिया, "मुझे यह चुनौती स्वीकार है।"

"लेकिन उसका परिणाम भी याद है न ? या तो मुफ्त में विज्ञापन या अमेरिका से निष्कासन। और मुझे विश्वास है, आपको दूसरी शर्त का ही पालन करना पड़ेगा।"

"उसकी चिन्ता आप क्यों करती हैं ? मैं दोनों के लिए तैयार हूँ, पहले प्रश्न तो कीजिए। सम्भव है आपका विचार

गलत निकले ।"

"अच्छा ।" युवती को कीरो के अडिग आत्मविश्वास पर आश्चर्य हुआ। उसने बड़े गर्व के साथ अपना चमड़े का बैग खोला और उसमें से एक लिफाफा निकाल कर मेज पर रखते हुए कहा, "इसमें कुछ व्यक्तियों के हाथों के चित्र हैं। उन्हें देखकर बताइए, कौन कैसा है ?"

कीरो ने कुछ कहा नहीं। चुपचाप लिफाफा उठाकर उसे खोलने लगा।

लिफाफे में विभिन्न प्रकार की रेखाओं वाले तेरह हस्त-चित्र थे। वे बहुत ही सफाई से बनाए गए थे। पूरी हथेली और उँगलियाँ छपी हुई थीं। एक-एक रेखा स्पष्ट थी।

अच्छे, सफेद मोटे कागज पर काली स्याही से छपे वे चित्र कीरो के सामने चुनौती बनकर चमक रहे थे। वह दस मिनट तक उन्हें उलट-पलटकर गौर से देखता रहा, फिर एक क्रम से रखकर बोला, "मैं आपके प्रश्न का उत्तर दे रहा हूँ, मिस रदरफोर्ड !"

युवती ने देखा, युवक का स्वर दृढ़ आत्मविश्वास से स्थिर है। उसमें न कोई शंका है, न अधीरता। माथे पर गम्भीर विचारों की रेखाएँ उभर आई हैं और आँखों में भरा गहन रहस्य कुछ अधिक चमक उठा है।

डोरा चंचल-सी हो उठी। लगा कि यह युवक केवल ठग ही नहीं—बाजीगर भी है ! बोली, "बताइए, मैं नोट करती जाती हूँ।"

कीरो को ऐसा प्रतीत हुआ कि यही उसके जीवन का सब से बड़ा दाँव है। युवती की चंचल आँखों में बैठा जैसे सारा अमेरिका उसे घूर रहा है।

उसने बताना आरम्भ किया—

'यह पहला चित्र किसी आयरिशमैन के हाथ का है। इसका शरीर पहलवानों जैसा सुगठित होगा। कुश्ती लड़ना इसका पेशा भी हो सकता है। घर में यह अकेला है—माँ-बाप कोई नहीं। इसकी शादी कहीं होते-होते रह गई। अब अलमस्त घूमा करता है।"

डोरा की आँखें फैल गईं। जितने चित्र वह लाई थी, वे सब बड़े गोपनीय ढंग से 'न्यूयार्क वर्ल्ड' की चित्रशाला में ही बनाए गए थे। जिन लोगों के हाथों की वे छापें ली गई थीं, उनसे भी कीरो का कोई भी परिचय नहीं था। उनके विषय में वह स्वप्न में भी कुछ नहीं जान सकता था। पर अपने ज्योतिष ज्ञान के सहारे जो कुछ उसने बताया, वह आश्चर्यजनक रूप से सत्य था।

वास्तव में पहला चित्र रिचर्ड कोकर नामक एक आयरिश पहलवान का ही था, जो आजकल प्रेम में असफल होकर पहलवानी का फक्कड़ जीवन बिता रहा था। वह एक अच्छा घूंसेबाज भी था।

सचमुच उसके माँ-बाप मर चुके थे। डोरा कीरो के ज्ञान पर दंग रह गई, लेकिन कुछ बोली नहीं। चुपचाप बैठी रही।

कीरो ने दूसरा चित्र उठा लिया।

दस सेकण्ड तक उसे ध्यान से देखते रहने के बाद उसने बताया—

"और यह किसी ललित कला-प्रेमी का हाथ है। सम्भवतः इसे संगीत से अधिक प्रेम है। कुछ-कुछ साहित्यिक भी होगा। इसे अपनी कला से थोड़ी-बहुत प्रसिद्धि भी मिलेगी।"

डोरा जैसे एक सीढ़ी और नीचे गिर गई। कीरो का यह उत्तर भी पूर्णतः सत्य था। उन दिनों अमेरिका में संगीत की 'राबिन हुड' नामक पुस्तक बहुत प्रसिद्ध थी। उसके रचयिता

का नाम था—डे कोवेन। यह हस्त-चित्र उसी का था।

तीसरे चित्र पर कीरो ने कहा—

"यह आदमी नशेबाज है। किसी ने इसे नशे में जहर मिलाकर जरूर दिया होगा! वैसे इसकी मृत्यु क्षयरोग से होगी।"

इस बार तो डोरा की पीठ पर जैसे चाबुक लगा हो, पर उसने अपने को संभाला और मुँह पोंछने के बहाने रूमाल से चेहरे के भाव छिपा लिए। कीरो की घोषणा एकदम ठीक थी। वह हाथ ज्योफ्रे नामक एक जौहरी का था जो पेरिस में रहते हुए शराब का दीवाना-सा हो गया था। वहीं किसी ने उसे जहर पिला दिया था और अब वह क्षयग्रस्त होकर न्यूयार्क के एक सेनेटोरियम में पड़ा मृत्यु की प्रतीक्षा कर रहा था।

"और यह तो किसी मजदूर का हाथ है। दुर्घटनाग्रस्त होकर अपंग होने की आशंका है। इसे कभी पेट भरकर खाना भी नसीब नहीं होगा।" कीरो चौथा चित्र हाथ में उठाए बोल रहा था।

डोरा ने मन ही मन कहा, 'हे भगवान! कीरो यह सब कैसे बताता चला जा रहा है? कोयले की खान में चोट खाए हुए इस मजदूर के बारे में यह जान भी कैसे सकता है!'

लेकिन कीरो का ध्यान डोरा की ओर नहीं था। वह एक के बाद एक चित्र उठाता गया और उसके विषय में बताता रहा। एक चित्र का विवरण सुनकर डोरा के मुँह से निकल पड़ा, "अरे!"

बात सचमुच चकित करने वाली थी। कीरो कह रहा था:

"यह जिस स्त्री का हाथ है, उसे धन तो मिलेगा; लेकिन प्रेम के लिए वह जीवन भर तरसेगी। उसे अपने मन का पति मिलना असम्भव है।

डोरा की कल्पना में लिलियन रसेल नामक उस महिला की

मूर्ति साकार हो उठी, जिसके पास सम्पदा तो बहुत थी; लेकिन चार बार विवाह करने पर भी उसे पति का सुख नहीं मिला था। उसके चारों पति निकम्मे निकले, जिनसे तलाक द्वारा ही छुट्टी लेनी पड़ी थी।

अगले चित्र पर कीरो ने पूछा, "अच्छा, तो मिस डोरा ! क्या यह व्यक्ति आपकी जान-पहचान का है ?"

"क्यों ?" डोरा ने चौंककर उसकी ओर देखा।

"इसलिए कि···" कीरो ने कहा, "···यदि ऐसा है तो पहले आप फौरन इसकी जमानत का प्रबन्ध कर लीजिए !"

"आखिर क्यों ?" डोरा ने अपनी मानसिक अस्थिरता को छिपाते हुए गम्भीर स्वर में पूछा।

"यह भयंकर हत्यारा अपनी लापरवाही और अपराधों की अधिकता के कारण बस, आज-कल में ही गिरफ्तार होने वाला है। इसे शर्तिया जेल की सजा होगी और वहीं यह पागल हो जाएगा। इसके जीवन का अन्तिम भाग बहुत ही दयनीय होगा। यह बुरी तरह तड़प-तड़पकर मरेगा।"

कीरो का यह कथन भी अक्षरशः सत्य निकला। वह छाप एक जालसाज डाक्टर के हाथ की थी। उसका नाम था हेनरी मेयर। बीमा कम्पनियों का रुपया हड़पने के लिए वह अपने बीमाशुदा कई रोगियों को जहर देकर मार चुका था। आखिर भेद खुला और वह बन्दी बना लिया गया। इस समय वह जेल में था। और अदालत में उस पर धोखाधड़ी तथा हत्या का मुकदमा चल रहा था।

कुछ दिन बाद उसकी सचमुच वही दशा हुई, जिसकी घोषणा कीरो ने की थी। सजा पाने पर जेल में ही डाक्टर हेनरी मेयर पागल हो गया। आखिर उसके उपद्रवों से तंग आकर जेलर ने उसे पागलखाने भेज दिया। वहाँ ठीक होना तो दूर

रहा, उसका मानसिक सन्तुलन और भी बिगड़ गया। उस पर चौबीसों घंटे जैसे शैतान सवार रहता था। अन्त में उसे लोहे की मोटी जंजीरों से जकड़ दिया गया और उन्हीं से सिर टकरा-टकराकर एक रात उसने अपनी जान दे दी।

अन्तिम चित्र उठाकर कीरो ने कहा, "इसके सम्बन्ध में तो कुछ भी बताना बेकार है!"

"क्यों?" डोरा ने पेंसिल मेज पर रखते हुए गहरी साँस खींची।

"यह बेचारा जन्मान्ध है। इसने दुनिया में काला-सफेद कुछ देखा ही नही। तब इसके पीछे सिर खपाने से क्या फायदा?"

डोरा का नशा उतर चुका था। उसके दम्भ का दुर्ग चूर-चूर होकर बिखर गया। अपनी नोटबुक और चित्र बैग में रखकर उसने कहा, "कष्ट के लिए क्षमा करें। हमारे दैनिक की ओर से आज शाम को ही आपको इस परीक्षा के परिणाम की सूचना दे दी जाएगी!"

कीरो ने उठकर विनम्र मुस्कान के साथ कहा, "धन्यवाद, मिस रदरफोर्ड!"

डोरा अभिवादन करके चली गई। लेकिन अब उसकी आँखों में न वह गर्व था, न चाल में वह फुर्ती। पराजय की छाया उसके चेहरे पर साफ झलक रही थी।

शाम को 'न्यूयार्क वर्ल्ड' का चपरासी कीरो के लिए एक पत्र लेकर आया, जिसमें उसकी अग्नि-परीक्षा के परिणाम की सूचना थी।

कीरो ने उत्कण्ठित होकर उसे खोला। लिखा था

"प्रिय महाशय!

"आपके अमेरिका-आगमन के पूर्व ही आपके

की काफी निन्दा-प्रशंसा हमने सुनी थी। हमें स्वयं आपकी योग्यता पर सन्देह था; इसीलिए मिस डोरा को भेजकर आपकी परीक्षा ली गई थी। यह जानकर प्रसन्न होंगे कि आप परीक्षा में सफल रहे हैं। हम अपने वचनानुसार शीघ्र ही आपका विज्ञापन प्रकाशित करेंगे।

भवदीय
—सम्पादक"

कीरो का मन मयूर नाच उठा। उसने मन ही मन कहा, "ओ भारतीय विद्वानो, तुम्हारे उपकार से मैं कभी उऋण न हो सकूँगा!"

दो दिन बाद रविवार था। 'न्यूयार्क वर्ल्ड' ने अपना साप्ताहिक विशेषांक निकाला। उसके पूरे दो पन्ने कीरो की प्रशंसा से भरे हुए थे। सम्पादक ने अपने भेजे हुए चित्रों और उन पर की गई कीरो की भविष्यवाणियों का विस्तार से वर्णन किया था। यही नहीं, उसने लिखा था:

"इतनी छोटी उम्र में ज्योतिष का ऐसा प्रकाण्ड विद्वान होना संसार का एक महान आश्चर्य है। इधर कई शताब्दियों में, इस प्रकार का हस्तरेखा-शास्त्री, संसार के किसी भी देश में पैदा नहीं हुआ। हमें विश्वास है, प्रोफेसर कीरो को विश्वव्यापी अक्षय कीर्ति मिलेगी।"

'न्यूयार्क वर्ल्ड' संसार का प्रमुख पत्र था। उसकी प्रतिष्ठा सर्वत्र थी। उसमें प्रशंसा छपते ही सारी दुनिया की आँखें कीरो की ओर उठ गईं। बड़े-बड़े विद्वान, सेनाधिकारी, व्यापारी और राजा-महाराजा उससे मिलने को व्यग्र हो उठे। कोई स्वयं आता, कोई उसे अपने यहाँ आमन्त्रित करता।

कीरो—कभी का उपद्रवी जान ई० वार्नर—अब सबके सम्मान का पात्र हो गया था। उसके पास रुपयों का ढेर लग गया।

इस घटना के बाद तो कीरो को हस्तरेखा पढ़ना ही अपना निश्चित व्यवसाय बना लेना पड़ा।

लन्दन में डायमण्ड पार्क वाला बँगला सूना पड़ा था। पर कीरो को उसकी चिन्ता नहीं हुई। नौकरों को वहाँ का प्रबन्ध सौंपकर उसने न्यूयार्क में भी एक बड़ा-सा बँगला खरीदा और स्थायी रूप से वहीं रहने लगा।

सन् १८६३ में ३३ वर्ष की आयु में वह न्यूयार्क पहुँचा था। तब से प्रायः तीस वर्ष तक वह अमेरिका में ही रहा। फिर भी कीरो इंगलैण्ड को भूला नहीं। बीच-बीच में वह लन्दन आया करता था। वैसे तो स्थायी रूप से कहीं लम्बे समय तक रहना उसके लिए सम्भव नहीं था। वह प्रायः देश-विदेश की सैर ही करता रहता।

स्कूली शिक्षा तो कीरो को नहीं मिली थी, परन्तु संगति के प्रभाव से उसे कई विषयों का ज्ञान हो गया था। ज्योतिष तो उसका प्रिय विषय था ही, साथ ही भारतीय तन्त्र-मन्त्र, दर्शन-शास्त्र, साहित्य और प्रेतात्मावाद का भी वह अच्छा ज्ञाता था।

इसके बावजूद एक बात बड़ी विचित्र थी—कीरो का अपना जीवन बहुत ही रहस्यमय था। उसके विषय में किसी को यह जानकारी नहीं थी कि उसका परिवार कहाँ है, या वह स्वयं कब कहाँ रहता है। कभी-कभी वह अचानक लुप्त हो जाता था। फिर महीनों तक उसका पता नहीं चलता था। और प्रायः साल-दो साल बाद वह सैकड़ों मील दूर सहसा प्रकट हो जाता था।

५

कीरो कुछ ही दिनों में विश्वविख्यात ज्योतिषी के रूप में जाना जाने लगा। कितने ही लोगों ने उसे अपना हाथ दिखाया। जाने कितनों के सम्बन्ध में कीरो ने भविष्यवाणियाँ कीं। किन्तु कितने आश्चर्य की बात है कि स्वयं अपना हाथ उसने कभी नहीं देखा। अपना भविष्य जानने की उत्सुकता कभी उसके मन में उठी ही नहीं।

इस सम्बन्ध में एक बड़े रोचक प्रसंग का वर्णन कीरो ने स्वयं किया है।

बात उन दिनों की है, जब कीरो पेरिस में था।

उस समय तक कीरो अविवाहित ही था। शायद कभी इस बारे में सोचने का मौका ही नहीं मिला। बचपन से ही घुमक्कड़ स्वभाव था। यात्रा पर यात्रा करता रहता रहा। ज्योतिष सीखने के सम्बन्ध में भारत के कोने-कोने की उसने यात्रा की। ज्ञान की खोज में भटकता रहा।

और जब ज्योतिषी बनकर लन्दन लौटा तो वह अनोखे ज्ञान का स्वामी था। अपनी विद्या के बल पर उसने भविष्यवाणियाँ करके लोगों को चकित कर दिया। पहले वह आनन्द लेने के लिए लोगों का हाथ देखता था। फिर शौक के कारण। और धीरे-धीरे यही उसका पेशा बन गया। यश मिला। धन मिला। सम्मान मिला। वह हर क्षण अपना भाग्य जानने वालों से घिरा रहता था। उसे कभी मौका ही नहीं मिला कि शादी-

व्याह करके घर बसाने की बात सोचे।

पेरिस मे उन दिनों एक अनोखा क्लब चल रहा था—कुंवारों का क्लब। यह कुछ मनचलों की चुहल भर नहीं थी। क्लब करीब बारह-तेरह वर्षों से बड़े व्यवस्थित रूप से चल रहा था। उस क्लब की विशेषता यही थी कि उसके सारे सदस्य और पदाधिकारी कुंवारे थे। उनमें से किसी का भी विवाह नहीं हुआ था। और न भविष्य मे वे विवाह करना चाहते थे।

क्लब के लोग स्त्रियों से घृणा करते हों या उनसे शत्रुता रखते हों, ऐसी बात भी नहीं थी। वे तो सिर्फ कुंवारे थे और कुंवारे रहना चाहते थे। अगर कहीं कोई स्त्री किसी परेशानी मे पड़ी होती तो वे बडी हमदर्दी क साथ उसकी पूरी मदद करते थे।

कीरो कुंवारा था और कुंवारो के क्लब का सदस्य था।

उस दिन मौसम बड़ा सुहावना था। सध्या का समय। हमेशा की तरह सभी सदस्य क्लब मे बैठे मनोरजन कर रहे थे। कोई नाच रहा था। कोई खेल रहा था। कोई खा-पी रहा था।

एकाएक क्लब का एक बेयरा आकर कीरो के पास खडा हो गया। उसने सम्मान से सिर झुकाकर ट्रे आगे बढा दी। उसमें एक विजिटिंग कार्ड पडा था। कीरो ने कार्ड उठाकर पढा—'मिस फ्लोरेंस।'

बेयरे ने आदर के साथ कहा, "यह आपसे मिलना चाहती है। बाहर इन्तजार कर रही है।"

मिस फ्लोरेंस ?

साथियों को आश्चर्य हुआ—कुंवारों के क्लब मे एक कुमारी का क्या काम ? वह भी कुंवारो क क्लब के सदस्य कुवारे

रो से ?

कीरो स्वयं भी कुछ नहीं समझ पा रहा था। उसने फिर
हलाते हुए सोचा—पता नहीं कौन है! जाने किस काम से
आई हो। मिल लेना ठीक रहेगा।

और वह दरवाजे की ओर बढ़ चला।

पीछे से साथियों का कहकहा सुनाई पड़ा। किसी ने कहा,
"तुम कुँवारों के क्लब के सदस्य हो, यह बात याद रखना।
औरतों से मिलने-जुलने में कोई हर्ज नहीं है। लेकिन देखो, कहीं
उन पर रीझकर शादी-ब्याह की बात मत सोचने लगना।"

कीरो हँसा और दरवाजा खोलकर निकल गया।

फ्लोरेंस के पास पहुँचकर कीरो अचकचाया-सा ताकता
ही रह गया। इतने दिनों में देश-विदेश में उसने जाने कितनी
सुन्दर युवतियों को देखा था, पर फ्लोरेंस तो अपने ही ढंग की
सुन्दरी थी। एक बार देख ले तो दृष्टि हटाने का मन ही
न करे।

फ्लोरेंस धीरे से हँसी। बोली, "मैंने आपकी बड़ी प्रशंसा
सुनी है। आखिर मन पर काबू नहीं कर सकी, मिलने आ गई।"

कीरो सम्हला। बैठते हुए उसने पूछा, "कहिए, मैं आपकी
क्या सेवा करूँ?"

फ्लोरेंस ने अपना हाथ आगे बढ़ा दिया।

कीरो ने युवती की सुन्दर सुकुमार हथेली छुई तो सि
उठा। फिर उसने बरबस अपने ऊपर नियंत्रण किया औ
झुककर युवती की रेखाएं देखने लगा। वह अपने ज्ञान के
पर उसका भविष्य बताता रहा। युवती हूँ-हाँ करती र
सहसा कीरो ने चौंककर कहा, "अरे, आपके दो विवाह होंग

"दो विवाह!" युवती कौतूहलभरी आँखों से कीर
ओर ताकने लगी।

कीरो ने स्वीकृति में सिर हिला दिया।

थोड़ी देर बाद एक युवती भीतर आई। कीरो के पास
ड़ी होकर बोली, "आप जरा मेरा हाथ देखिए।"

कीरो की तबीयत बहुत खराब थी, फिर भी मन बहलाने
के लिए वह युवती का हाथ देखता हुआ बोला, "आपका एक
विवाह असफल हो चुका है। लेकिन जल्दी ही दूसरा विवाह
होने वाला है।"

"कब तक?"

"एक महीने के अन्दर!"

"यानी एक महीने में आप अच्छे हो जाएंगे?"

"मैं...क्या मतलब?" कीरो चौंका।

युवती मुस्कराई, बोली, "आपने शायद मुझे पहचाना
नहीं। मैं एक बार कुछ वर्ष पहले कुंवारों के क्लब में आपसे
मिल चुकी हूँ। उसी समय मैंने आपसे कहा था कि दूसरा
विवाह आपसे करूँगी। अब वह अवसर आ गया है। अब आप
जल्दी से अच्छे हो जाइए।"

कीरो को सारी बातें याद आ गईं। उसने फ्लोरेन्स को
पहचान लिया। अचकचाकर बोला, "लेकिन मैं तो कुंवा
के क्लब का सदस्य हूँ..."

"उससे क्या हुआ!" युवती हँसी, "मेरे भाग्य में जो लि
है, वह तो होगा ही!"

और सचमुच वही हुआ। एक महीने के अन्दर ही
अच्छा हो गया और उसने फ्लोरेंस से विवाह कर लिया।

न्यूयार्क की खुफिया पुलिस का दफ्तर। इन्स्पेक्टर रेनाल्ड अपने सहकारी रैमरे के साथ बैठा बातें कर रहा था। कीरो की ही चर्चा चल रही थी।

रैमरे ने कहा, "मेरी बात मानिए, सर! इसे नीचा दिखाना ही चाहिए। अपनी विद्या पर इसे इतना घमण्ड है कि सीधे मुंह बात तक नहीं करता। उस दिन मैंने अपना हाथ दिखाना चाहा, तो बोला, 'मैं बिना फीस लिए किसी का हाथ नहीं देखता! और मेरी फीस देना तुम्हारे वश का नहीं है!' "

रेनाल्ड भी शायद कीरो से चिढ़ा हुआ था। उसने कहा, "ठीक कहते हो, मुझे भी यही शिकायत है। देखो, कोई उपाय करता हूँ।"

इसके बाद दोनों में कुछ देर कानाफूसी होती रही।

फिर रेनाल्ड उठ खड़ा हुआ। बोला, "जाओ, यही करो।"

रैमरे ने फौजी ढंग से सलामी दी और बाहर निकल गया।

⊙

उसी रोज शाम को रेनाल्ड अपने पाँच साथी अफसरों को लेकर कीरो के मकान पर पहुँचा और एक हाथ की छाप देकर बोला, "मिस्टर कीरो! हम फीस के पाँच पौण्ड आपको दे रहे हैं, जरा इसे देखकर बताइए, यह आदमी कैसा है?"

कीरो ने छाप ले ली और एक मिनट तक उसे देखने के बाद बोला, "इन्स्पेक्टर महोदय! आप यह चिन्ता छोड़िए कि

आदमी कैसा है, सबसे पहले पता लगाइए कि यह है
?''

''क्यों ?'' रेनाल्ड ने बनावटी आश्चर्य से पूछा।

''अजी साहब !'' कीरो बोला, ''इसकी आयु समाप्त हो
ही है। जाकर तुरन्त इसे रोकिए, नहीं तो यह आत्महत्या कर
गा। जाइए फौरन। शायद, अभी आप बचा लें...आशा तो
नहीं है...फिर भी...''

रेनाल्ड का मुँह फक पड़ गया। उसका अनुमान था कि
कीरो उस छाप वाले आदमी के सम्बन्ध में लम्बी-चौड़ी बातें
बताएगा और तब उसे आसानी से झूठा सिद्ध किया जा सकेगा;
क्योंकि वह छाप एक ऐसे आदमी के हाथ की थी, जिसने किसी
कारणवश एक घंटा पूर्व अपने दफ्तर की छत से कूदकर आत्म-
हत्या कर ली थी। उसकी लाश थाने लाई गई थी और वहीं
रेनाल्ड ने उसकी छाप ले ली थी।

कीरो का विलक्षण ज्ञान देखकर रेनाल्ड कटकर रह गया।
वह चुपचाप लौट आया। वह समझ गया कि ऐसे किसी षड्यन्त्र
से किसी को नीचा दिखाना सम्भव नहीं है।

उन दिनों इंगलैण्ड के राजसिंहासन पर महारानी विक्टो
रिया विराजमान थीं। एक दिन उनकी ओर से कीरो को बुला
आया।

कीरो लन्दन पहुँचा।

आर्थर पेगेट नामक एक लार्ड के मकान में उसे ले ज
गया। वहीं एक व्यक्ति परदे की ओट में बैठा हुआ था।
को उसका हाथ देखने के लिए कहा गया। सिर्फ दाहिनी
परदे के बाहर थी, बस।

कीरो ने उसे देखा और कहा, ''यह व्यक्ति अभी चौ
रहेगा। ठीक पाँच वर्ष बाद इसे राजपद

होगा और ९ वर्ष तक शासन करने के बाद ६९ वर्ष की आयु में इसकी मृत्यु होगी।"

इसके बाद उसने रानी विक्टोरिया का भी हाथ देखा और उनके सम्बन्ध में कई महत्त्वपूर्ण बातें बताई। आगे चलकर उसकी भविष्यवाणी सही उतरी। उसकी बताई हुई तारीख पर ही रानी विक्टोरिया की मृत्यु हुई थी।

परदे की ओट मे बैठा व्यक्ति स्वयं इगलैण्ड के भावी सम्राट् सप्तम एडवर्ड थे जो सन् १९०२ में ६० वर्ष की आयु में गद्दी पर बैठे और ९ वर्ष शासन करने के बाद सचमुच १९११ में दिवगत हुए।

सन् १९०२ में वह इतने अधिक बीमार हो गए थे कि बचने की कोई आशा न थी। तब कीरो दुबारा बुलवाया गया था। उसने फिर वही बात कही थी, "आप लोग अधीर क्यों होते है? सम्राट का राज्याभिषेक ९ अगस्त को अवश्य होगा और वह निश्चित रूप से ९ वर्ष तक राज करेंगे।"

आगे चलकर यही हुआ, फलतः इगलैण्ड के राजवश में कीरो का सम्मान और भी बढ गया।

सन् १८९७ में कीरो लन्दन मे ही था। एक दिन उसे रूस के जार निकोलस द्वितीय का निमन्त्रण मिला। अगले दिन ही वह रूस के लिए रवाना हो गया।

लेकिन वहाँ भी वही आर्थर पेगेट के मकान की-सी घटना हुई। राजमहल में बुलाकर भी स्वय जार उससे नहीं मिला।

कीरो खिन्न होकर लौट पड़ा। रास्ते मे सहसा एक मामूली आदमी ने उसे एक हथेली की छाप दिखाकर पूछा, "इसके बारे में कुछ बताइए।"

कीरो का मन उचटा हुआ था। जार का व्यवहार उसे पसन्द नहीं आया था। उसने जल्दी से छाप देखी और उसी कागज

की पीठ पर यह भविष्यवाणी लिखकर लौटा दिया :

"यह जिस व्यक्ति के हाथ की छाप है, उसे जीवन भर लड़ाई और मार-काट की चिन्ता में घुलना पड़ेगा। उसे कभी शान्ति नहीं मिलेगी। और आज के ठीक बीस वर्ष बाद सन् १९१७ में, युद्ध में पराजित होकर इसे अपना सब कुछ गँवा देना पड़ेगा। यही नहीं, यह स्वयं भी ऐसी रोमांचकारी मृत्यु का शिकार होगा कि इतिहास में इसका विशेष उल्लेख किया जाएगा।"

आदमी कागज पढ़कर उलटे पाँवों लौट गया।

वह छाप स्वयं जार निकोलस के हाथ की ही थी।

कीरो की यह भविष्यवाणी भी अक्षरशः सत्य निकली। सन् १९१७ में रूस में राज्य-क्रान्ति हुई। जार के सारे अधिकार छिन गए। उनका परिवार उसी क्रान्ति में मारा गया। यहाँ तक कि स्वयं जार भी नहीं बचा। क्रान्तिकारियों ने उसे सरेआम, सड़क पर प्राणदण्ड दिया।

:

एक दिन कीरो के पास एक युवक आया—वेशभूषा से सभ्य और सुसंस्कृत। उसने पूछा, "मेरा भविष्य कैसा होगा, कृपया बताइए।"

कीरो ने उसकी रेखाएँ देखकर कहा, "तुम्हें सेना में ऊँचा पद मिलेगा। अनेक युद्धों में विजय पाओगे और इतिहास में तुम्हारा नाम लिखा जाएगा। लेकिन एक बात और है—तुम्हारी मृत्यु समुद्र में डूबने से होगी और इस अकाल मृत्यु से बचने का कोई उपाय भी नहीं है।"

युवक साहसी था—न डरा, न चिन्तित हुआ। प्रसन्नचित्त लौट आया। उसने सोचा—अगर यह सब होना ही है, तो चिन्ता कैसी ? मुझे अपना कर्तव्य करना चाहिए। इतिहास में मेरा

नाम अमर होगा, इससे बढ़कर और क्या हो सकता है ? मरना तो एक दिन सभी को है।

वही युवक आगे चलकर लार्ड किचनर के नाम से प्रसिद्ध हुआ। ब्रिटिश सेनानायकों में यह नाम अमर है। पहले महायुद्ध में लार्ड किचनर की वीरता ने शत्रुओं को कँपा दिया था। उनकी गणना महान योद्धाओं में की जाती है। कीरो की अन्तिम सूचना भी सत्य निकली—लार्ड किचनर की मृत्यु समुद्र में डूबकर ही हुई।

दिन बीत रहे थे और उम्र के साथ-साथ कीरो की सम्पत्ति और ख्याति भी बढ़ रही थी। अब वह ससार के किसी भी सभ्य देश के लिए अपरिचित नहीं था। सर्वत्र उसके विलक्षण ज्योतिषज्ञान की चर्चा होती थी।

एक दिन पार्क में टहलते समय कीरो की भेंट अंग्रेजी के प्रसिद्ध लेखक आस्कर वाइल्ड से हो गई। उन दिनों उसके नाटकों और उपन्यासों की धूम मची हुई थी। उसकी एक पुस्तक तो बहुत प्रसिद्ध थी—'पिक्चर आफ डोरियन ग्रे।'

उसे देखकर कीरो ने पूछा, "मिस्टर आस्कर वाइल्ड, कहाँ घूम रहे हैं ?"

यश के कारण आस्कर वाइल्ड में कुछ अहंकार आ गया था। उसने बड़ी उपेक्षा और तिरस्कार के साथ उत्तर दिया, "आप ही को खोज रहा था।"

"बताइए, क्या सेवा करूँ ?"

वाइल्ड का अहम् कुछ और प्रबल हो उठा। उसने कहा, "सेवा तो आप क्या करेंगे ! चलिए, मेरा हाथ भी देखकर कुछ बता दीजिए !"

"लाइए।" कीरो उसकी हथेली पकड़कर गौर से देखने लगा।

एक मिनट बाद उसने कहा, "मिस्टर वाइल्ड, आपकी एक रेखा मद्धिम हो रही है और उस पर टापू बन रहा है। यह लक्षण अच्छा नहीं है। सावधान रहें।"

"आखिर क्या होगा मुझे ?" वाइल्ड का स्वर गर्व और उपेक्षा से भरा हुआ था।

कीरो ने निस्संकोच कह दिया, "पाँच वर्ष के भीतर ही आपकी प्रसिद्धि को गहरा आघात लगेगा! और या तो आप कैदखाने में रहेंगे, या देशनिकाले की सजा पाकर कहीं बाहर भटकेंगे। आपकी मृत्यु विदेश में ही होगी।"

वाइल्ड ने कीरो को तीखी निगाह से घूर कर [illegible]; फिर अविश्वासपूर्वक ठठा कर हँसने लगा। उसने [illegible] पूछा, "मिस्टर कीरो, क्या आपका इरादा इस तरह [illegible] बातें बताकर मुझसे कुछ [illegible]कम ऐंठने का है ?"

"नहीं, एक पैस[illegible]।" कह कर की[illegible]

वाइल्ड की मृत्यु हुई ।

⊙

भारत के महान दार्शनिक और संन्यासी स्वामी विवेकानन्द अमेरिका गए हुए थे । शिकागो मे कीरो ने भी उनके दर्शन किए और उनका हाथ देख कर कुछ बातें बताईं । आगे चलकर वे भी सत्य प्रमाणित हुईं ।

कीरो ने अनेक देशों की यात्रा की थी । वह भारत भी आया । यहाँ उसने महात्मा गांधी, पण्डित मोतीलाल नेहरू और श्रीमती एनी बेसेण्ट की हस्तरेखाएँ देखकर उनके सम्बन्ध मे भी बहुत-सी बातें बताईं, जो समय-समय पर खरी उतरती रहीं । अन्य कई देशों के भी अनेक प्रसिद्ध व्यक्तियों के बारे में उसने बहुत-सी बातें बताई थी, जिससे उसे बड़ी प्रसिद्धि मिली ।

लेकिन इतना होने पर भी कीरो स्थायी रूप से कहीं रहता नहीं था, हमेशा भटकता ही रहता—कभी यहाँ, कभी वहाँ । हाँ, उसका अधिकांश समय न्यूयार्क और लन्दन में बीतता था और कभी-कभी वह महीनों के लिए अज्ञातवास करने लगता था ।

कीरो के जीवन में बहुत से ऐसे अवसर आए, जबकि उसने हस्तरेखा-ज्ञान के बल पर ऊपर से सभ्य और सुसस्कृत दीखने वाले कितने ही लोगों के अपराधों का पर्दाफाश कर दिया । उसने अमेरिका के कितने ही ऐसे बगुलाभक्तों की पोल खोल दी थी । यहाँ तक कि उसके ज्ञान से चिढ़कर कुछ न्यूयार्क-वासियों ने कानून की शरण ली और उसे वहाँ से निर्वासित कराके ही दम लिया ।

यही बात लन्दन में भी हुई । वहाँ की पुलिस :
ऊब गई थी । वह आए दिन ऐसे लोगों की शि ,

एक मिनट बाद उसने कहा, "मिस्टर वाइल्ड, आपकी एक रेखा मद्धिम हो रही है और उस पर टापू बन रहा है। यह लक्षण अच्छा नहीं है। सावधान रहें।"

"आखिर क्या होगा मुझे ?" वाइल्ड का स्वर गर्व और उपेक्षा से भरा हुआ था।

कीरो ने निस्संकोच कह दिया, "पाँच वर्ष के भीतर ही आपकी प्रसिद्धि को गहरा आघात लगेगा ! और या तो आप कैदखाने में रहेंगे, या देशनिकाले की सजा पाकर कहीं बाहर भटकेंगे। आपकी मृत्यु विदेश में ही होगी।"

वाइल्ड ने कीरो को तीखी निगाह से घूर कर देखा; फिर अविश्वासपूर्वक ठठा कर हँसने लगा। उसने व्यंग्य से पूछा, "मिस्टर कीरो, क्या आपका इरादा इस तरह की चिन्ताजनक बातें बताकर मुझसे कुछ रकम ऐंठने का है ?"

"नहीं, एक पेंस भी नहीं।" कह कर कीरो तेजी से चल पड़ा।

लेकिन यहाँ भी कीरो की ही विजय हुई। तीन वर्ष बीतते-बीतते वाइल्ड एक घोर दुराचार के मामले में पकड़ा गया। उसकी सारी कीर्ति धूल में मिल गई। लोग गली-गली उसके नाम पर थूकने लगे। उस पर मुकदमा चला और सजा हो गई। सजा भुगत चुकने पर जब वह जेल से छूटा, तो ग्लानि-वश फ्रांस भाग गया। लेकिन फिर कभी उसे शान्ति और सम्पन्नता न मिल सकी। वह दीन-दरिद्र की भाँति रात-दिन इधर-उधर भटकता रहता था। न पेट भर भोजन मिलता था, न वस्त्र। कोई पहचान भी नहीं पाता था कि यह वही विश्व-विख्यात साहित्यकार आस्कर वाइल्ड है।

अन्त में, कीरो के कथनानुसार ही, अपनी जन्मभूमि से सैकड़ों मील दूर फ्रांस में घोर संकट सहन करते हुए आस्कर

वाइल्ड की मृत्यु हुई।

⊙

भारत के महान दार्शनिक और संन्यासी स्वामी विवेकानन्द अमेरिका गए हुए थे। शिकागो में कीरो ने भी उनके दर्शन किए और उनका हाथ देख कर कुछ बातें बताई। आगे चलकर वे भी सत्य प्रमाणित हुई।

कीरो ने अनेक देशों की यात्रा की थी। वह भारत भी आया। यहाँ उसने महात्मा गांधी, पण्डित मोतीलाल नेहरू और श्रीमती एनी बेसेण्ट की हस्तरेखाएँ देखकर उनके [illegible] में भी बहुत-सी बातें बताई, जो समय-समय पर [illegible] रहीं। अन्य कई देशों के भी अनेक प्रसिद्ध [illegible] में उसने बहुत-सी बातें बताई थीं, जिनसे [illegible] मिली।

लेकिन इतना होने पर भी कीरो [illegible] नहीं था, हमेशा भटकता ही रहता [illegible] हाँ, उसका अधिकांश समय [illegible] और कभी-कभी वह महीनों के [illegible] था।

की मृत आत्मा से ही उस चित्र का भेद कीरो को ज्ञात हुआ था।'

इसी प्रकार अपने पिता की बीमारी का समाचार पाकर कीरो उन्हें देखने अमेरिका गया, पर पिता की मृत्यु हो चुकी थी। रात में उनकी आत्मा ने कीरो को बताया कि लन्दन के अमुक मकान की फलाँ अलमारी में मेरा सारा धन और दूसरे कागज-पत्र रखे है, जाकर ले लेना।

कीरो ने लन्दन आकर पता लगाया, तो बात ठीक निकली—प्रेतात्मा के बताए हुए स्थान पर उसे सारे कागजात मिल गए।

रेल में मरे हुए एक इजन ड्राइवर की आत्मा से भी कीरो की बात-चीत हुई थी।

यही उसका नशा था, यही उसका शौक था। जीवन भर कीरो इसी मे लगा रहा।

लन्दन से देशनिकाले की आज्ञा पाकर कीरो का मन खिन्न हो उठा। अब तक वह प्रौढ हो चुका था। एकाएक उसे न जाने क्या सूझा, वह पेरिस जा पहुँचा। वहाँ उसने ज्योतिष की सारी पुस्तकें अलमारी में बन्द कर दी और 'शैम्पेन' नामक उच्चकोटि की अगूरी मदिरा का कारखाना खोल दिया। धन्धा तो अच्छा चला, लेकिन कीरो का मन उसमें लगा नही।

कुछ ही वर्षो बाद उसने कारखाना बन्द कर दिया और एक अखबार निकालने लगा—'अमेरिकन रजिस्टर'। उसका सम्पादक स्वय कीरो ही था। अखबार खूब चला भी, लेकिन थोड़े ही दिनों बाद बन्द हो गया। उसमें कीरो उन तमाम धनी अमेरिकनों के काले कारनामे छापा करता था, जो ऊपर से सभ्य दीखने पर भी असल में भयकर भेड़िए थे। ऐसे सफेद-पोश गुण्डों की खबर लेने में कीरो को बड़ा आनन्द आता था।

कुछ दिन बाद कीरो का तरगी स्वभाव फिर जागा। उसने

'अमेरिकन रजिस्टर' का प्रकाशन बन्द करके एक प्राइवेट बैंक खोल दिया। रुपया उसके पास था ही, बैंक का धन्धा भी जोर-शोर से चल निकला।

लेकिन इस धन्धे में कीरो एक नए रूप में आया था। उसका 'कीरो' नाम गायब हो गया। अब वह अपने को काउण्ट लुई हामों बताता था। इसी नाम से वह जुबिली बैंक का डायरेक्टर भी था।

उसकी वेश-भूषा और रहन-सहन में भी इतना अन्तर आ गया था कि लोग कीरो को एकदम भूल-से गए। चारों ओर काउण्ट लुई हामो की ही तूती बोलने लगी। बैंक शान से चल रहा था। लोग देखकर ताज्जुब करते।

सन् १९०९ की बात है—एक दिन पेरिस की नगर पुलिस के दफ्तर में दो अमेरिकन महिलाएँ पहुँची। उन्होंने इन्स्पेक्टर से रिपोर्ट की, "श्रीमान्! जुबिली बैंक के डायरेक्टर काउण्ट लुई हामों ने हमारे साथ जालसाजी करके हमारे रुपए हड़प लिए। हमारी मदद कीजिए!"

इन्स्पेक्टर का नाम था जेवर्त। वह बोला, "कितना रुपया था?"

"पन्द्रह लाख!"

"पन्द्रह लाख!" जेवर्त की आँखें आश्चर्य से फैल गईं।

"हाँ, श्रीमान्। पूरे पन्द्रह लाख थे।"

"आप लोगों का पेशा क्या है? अपना पूरा पता बताइए।"

"जी, मेरा नाम है—लूसिना, और यह मेरी बहन है—फेमिना। हम अमेरिकन हैं। यहाँ रहते हमें दस वर्ष हो गए। हमारे पति जौहरी हैं। वह घूम-घूम कर रत्नों का व्यापार करते हैं। काउण्ट लुई ने हमसे लम्बे सूद पर रुपया माँगा था, लेकिन अब वह एक पैसा भी नहीं दे रहा है।"

इन्स्पेक्टर जैवर्ते ने उसे धीरज बँधाया, "मैं आज ही उसे नोटिस भेजूँगा। आप सब्र कीजिए। मैं पूरी कोशिश करूँगा कि आपके रुपए…"

"लेकिन वह तो भाग गया है! बैंक में बहुत कम रुपए हैं। डायरेक्टर काउण्ट लुई का कल शाम से ही कुछ पता नहीं चल रहा है। शायद वह पेरिस में है ही नहीं।"

"सारी रकम उड़ा ले गया!" इन्स्पेक्टर चिंतित हुआ। फिर कुछ सोचकर बोला, "लेकिन आप लोग निराश न हों, मैं सी० आई० डी० की सहायता से उसे खोजकर रहूँगा।"

महिलाएँ लौट गईं और जैवर्ते उसी दम काउण्ट लुई हामों की खोज में व्यस्त हो गया।

फिर क्या था—फ्रांस, इंगलैण्ड और अमेरिका के अखबारों ने आसमान सिर पर उठा लिया। चारों ओर काउण्ट लुई हामों की खोज होने लगी।

अन्त में पुलिस को सफलता हो मिल ही गई और उसने अखबारों में सूचना छपवाई, "पेरिस के जुबिली बैंक का डायरेक्टर, जो अपने को काउण्ट लुई हामों बताता था, असल में हस्तरेखाओं का वही प्रसिद्ध ज्ञाता प्रोफेसर कीरो है। उसका असली नाम जान ई० वार्नर है।"

कीरो उन दिनों लन्दन के बेलाडं स्ट्रीट में एकान्तवास कर रहा था। यह सूचना पढ़ते ही वह एकदम प्रकट हो गया और तुरन्त पेरिस जा पहुँचा। अदालत में उसके खिलाफ मुकदमा दायर हो चुका था, लेकिन उसने बाहर ही दोनों महिलाओं से भेंट करके मामला निबटा लिया और उन्हें रुपए दे-देकर सीधा लन्दन लौट गया। मुकदमा खारिज हो गया। पेरिस के के तमाशबीन हाथ मलते रह गए।

लन्दन में रहते हुए, सन् १९२७ में कीरो ने एक पुस्तक

लिखी। उसमें संसार के कई देशों का वर्णन करते हुए उसने इंग्लैण्ड के राजकुमार ड्यूक आफ विंडसर (भविष्य में अष्टम एडवर्ड) के विषय में लिखा था : "यह राजकुमार किसी स्त्री के प्रेम में इतना अधिक लीन हो जाएगा कि उसके कारण इसे राज-सिंहासन से भी वंचित होना पड़ेगा। प्रेम के पीछे राजगद्दी का परित्याग करने वालों में यह एक ऐतिहासिक व्यक्तित्व होगा।"

आगे चलकर उसी पुस्तक में कीरो ने भारत के भविष्य पर विचार करते हुए लिखा था : "बीस वर्ष और बीतने के बाद हिन्दुस्तान में भयंकर गृहकलह होगा। वहाँ के हिन्दू और मुसलमान आपस में लड़कर ऐसी खून की नदी बहाएँगे कि देश का सारा ढांचा ही बदल जाएगा।"

इस भविष्यवाणी को सारे संसार ने सत्य होते देखा। दस वर्ष बाद ही, सन् १९३७ में, अष्टम एडवर्ड को इंग्लैण्ड का राजमुकुट इसलिए त्याग देना पड़ा कि वह सैम्पसन नामक एक युवती से प्रेम करते थे। *राजकुल के नियमानुसार सम्राट का ऐसा* आचरण उचित नहीं था। मन्त्रियों तथा परिवार के लोगों ने उन्हें बहुत समझाया, पर,वह नहीं माने। अन्त में उनसे कहा गया—सैम्पसन और साम्राज्य में से एक को चुनना पड़ेगा। ड्यूक आफ विंडसर ने तुरन्त राजमुकुट को त्याग दिया।

इस घटना को लेकर अखबारों में अनेक प्रकार की तस्वीरें छापी गईं, जिनमें एडवर्ड को तराजू लिए हुए दिखाया गया था। तराजू के एक पलड़े में सैम्पसन थी, दूसरे में सारा ब्रिटिश साम्राज्य। एडवर्ड प्रसन्न भाव से देख रहे थे कि सैम्पसन वाला पलड़ा ही भारी है।

बीस वर्ष बाद सन् १९४७ में भारत के सम्बन्ध में कीरो की वह भयानक भविष्यवाणी भी सही उतरी। हिन्दुस्तान-पाकिस्तान का विवाद उठते ही जैसा भयानक दंगा इस देश में

हुआ, उसे पढ़-सुनकर रोंगटे खड़े हो जाते हैं।

भारत से लौटने के बाद, कीरो के जीवन का एक बड़ा भाग अमेरिका में ही बीता था, पर अन्तिम दिनों में उसे अपनी मातृ-भूमि के मोह ने कुछ ऐसी प्रेरणा दी कि वह इंगलण्ड चला गया। लन्दन से उसे विशेष प्रेम था, वहीं उसने हस्तरेखा-विज्ञान पर कई पुस्तकें भी लिखीं। उसकी कुछ पुस्तकें तो विश्व भर में प्रसिद्ध हैं—'लेंग्वेज आफ दी हैंड,' 'बुक आफ नम्बर्स,' 'गाइड टु दि हैण्ड,' 'यू एण्ड योर हैण्ड,' 'ह्वेन वेयर यू बोर्न,' 'यू एण्ड योर स्टार्स' इत्यादि। साथ ही वह समय-समय पर दूसरे अनोखे-अनोखे धन्धे भी करता रहा।

कीरो ने उसे गौर से देखा। फिर पूछा, "आपका नाम ?"

"मुझे वाई० डोलर कहते हैं।"

"यह नाम मैं ने सुना हुआ है ! शायद आप जागीरदार हैं।"

"जी हाँ, पैंकार्डी की जागीर मेरी ही है।"

"तब तो आपका सम्बन्ध राजकुल से है। आप तो लार्ड हैं न ?"

वह व्यक्ति गर्व और प्रसन्नता से मुस्करा पड़ा।

"मैं बताता हूँ," कीरो ने कहा, "आज तक किसी भी हंगेरियन सामन्त ने रत्नों की खेती नहीं की। मैं चाहता हूँ, आप यही धन्धा करें—करोड़पति हो जाएँगे।"

"रत्नों की खेती !" डोलर चकित रह गया।

"मेरा मतलब है—हीरे की खानें खुदवाइए।"

"लेकिन ऐसे ही हीरा कहाँ मिल जाएगा ?"

"वह मैं बताऊँगा। आप धन मुझे दें, मैं जमीन खरीदने का प्रबन्ध कर दूँगा; फिर आप वहाँ खुदाई कराके हीरे निकालें।"

"लेकिन आपका परिचय ?" डोलर ने उस पर गहरी निगाह डाली।

"आप जिसे खोज रहे हैं, मैं वही हूँ।"

"कौन ! प्रोफेसर कीरो ?" डोलर चौंका।

"जी हाँ।" कीरो मुस्करा पड़ा।

डोलर भी प्रसन्नता से हँस पडा। दोनों के हाथ मिल गए।

अन्त में डोलर धन देने को तैयार हो गया। कीरो ने उसे भरोसा दिया, "मिस्टर डोलर ! आप निश्चिन्त रहें। मैं ज्योतिष विद्या के द्वारा किसी ऐसे भूमि-खण्ड का पता लगाऊँगा, जो आपको भारी मात्रा में हीरे दे सकें।"

डोलर ने एक सप्ताह में रुपए देने का वादा करके अपने

र की राह ली और कीरो सोचने लगा, अगर शिकार फँस
या तो बस, बेड़ा पार है !

मनुष्य का स्वभाव और उसकी मनोवृत्ति बदलती रहती है। बुढ़ापे में मनुष्य के तन-मन शिथिल हो जाते हैं और ज्ञान भी भ्रष्ट हो जाता है। उसकी चित्तवृत्ति बच्चों की-सी चंचल और अस्थिर हो जाती है। उस दशा में मनुष्य हठी, लालची और स्वार्थी हो जाता है। यही हाल कीरो का भी हुआ।

वैसे तो कीरो ने अपार धन कमाया था; विश्व भर में वह अतुलित सम्मान भी पा चुका था; लेकिन बुढ़ापे के साथ-साथ उसकी लोलुपता भी बढ़ती जा रही थी।

एकाएक उसके मन में विचार उठा—अगर मैं लॉर्ड डोलर का दिया हुआ सारा धन हड़प जाऊँ तो कौन पूछने वाला है !

कीरो के जीवन में यह दूसरा अवसर था, जब वह लोभ के कारण विचलित हो गया। पहली बार फेमिना और लूसिना के साथ और इस बार डोलर के साथ उसकी नीयत खराब हो गई। दोनों बार षड्यन्त्र के मूल में धन का लोभ ही मुख्य था।

असल में वह हस्तरेखाएँ पढ़ते-पढ़ते ऊब गया था। दूसरा कोई परिश्रम का धन्धा भी उसके वश का नहीं था। किसी काम में एकाग्र होकर जुट सकना उसके लिए अब सम्भव नह था। आदतें बिगड़ी हुई थीं—लम्बे खर्च, सैर-सपाटा, अच्छे अच्छे कपड़े, बढ़िया से बढ़िया शराब और दो रुपए माँ वाले को सौ रुपए देने की आदत। इन सब ने मिलकर की को एक अलमस्त बादशाह जैसा बना रखा था। इसी का अन्त में उसे षड्यन्त्रों का सहारा लेना पड़ा।

ठीक छठें दिन डोलर लौट आया। उसके साथ तीन थे। उसने कहा, "मिस्टर कीरो ! मैं धन ले आया हूँ। आपने कहीं जमीन का पता लगाया ?"

"कई जमीने हैं—वेल्स में है, अमेरिका के मैक्सिको राज्य में है, भारत के कोलार जिले में है। अफ्रीका और आस्ट्रेलिया में भी कई जगहें है। जहां भी चाहेंगे, ले लेंगे।"

"अरे, उतनी दूर विदेश मे!" डोलर ने आँखें फाड़ कर पूछा, "कही इगलैंड-फ्रांस में ऐसी जगह नही मिल सकती?"

"मिलने को तो हगरी में भी मिल जाएगी, रूमानिया मे भी!" कीरो ने व्यग्य से कहा, "लेकिन यहाँ दाम वहुत लगेंगे। अफ्रीका-आस्ट्रेलिया में अभी सभ्यता कम फैली है। वहाँ जमीन सस्ती और अच्छी मिलेगी। वहां हीरा-सोना सब कुछ निकलेगा।"

डोलर सोचने लगा।

कीरो ने फिर कहा, "मैं जल्दी ही विदेश जाने वाला हूँ। आप चाहें तो साथ चल सकते है। वही सौदा तय हो जाएगा।"

रत्नों के लोभ ने डोलर को भी डगमगा दिया था। उसने कहा, "ठीक है, मैं आपके साथ चलूगा। कहाँ चलेंगे?"

"पहले अमेरिका जाऊँगा; फिर अफ्रीका और आस्ट्रेलिया!"

"तव मैं सारा धन वापस लिए जा रहा हूँ। साथ ही तो चलना है। जब चलेंगे, इसे भी लेते चलेगे।" डोलर उठ खडा हुआ।

कीरो को लगा मानो चिडिया पिंजडे में आकर भी उडी जा रही है। उसने कहा, "यह बार-बार का बोझ ढोना कहाँ तक ठीक होगा! गुण्डो और डकैतों का खतरा आप क्यों मोल लते है? मेरी राय मे तो इसे यहीं छोड जाइए। आखिर साथ ही तो चलेंगे, तब इतनी घबराहट क्यो?"

कीरो और उसकी प्रसिद्धि से डोलर इतना प्रभावित था कि पूरे दस लाख फ्रैंक की भारी रकम उसने विना किसी लिखा-

पढ़ी के वहीं छोड़ दी और लौट गया।

तय रहा कि पाँचवें दिन ही प्रस्थान कर दिया जाएगा।

लेकिन पाँचवें दिन जब डोलर आया तो कीरो गायब था। खोजने पर भी कहीं उसका पता न चल सका। डोलर के हाथों के तोते उड़ गए। उसने तुरन्त पुलिस में रिपोर्ट कर दी और तमाम प्राइवेट जासूसों को नियुक्त करके कीरो की खोज कराने लगा।

सारे लन्दन के अखबारों में एक वार फिर से कीरो के विरुद्ध लम्बे गवन का समाचार छपा। तरह-तरह की अफवाहें उड़ने लगीं। कोई उसकी प्रशंसा करता था, कोई निन्दा। चारों ओर सनसनी फैल गई। एक इतने बड़े सामन्त की इतनी लम्बी रकम का मामला था! और जिसके विरुद्ध था, वह भी कोई साधारण व्यक्ति न होकर विश्वविख्यात विद्वान था।

सर्वत्र एक ही चर्चा थी, "...जीवन भर इतनी प्रतिष्ठा और सम्पत्ति प्राप्त होते रहने पर भी, बुढ़ापे में कीरो को न जाने क्या सूझी जो इस तरह के मामलों में अपने को वदनाम करता फिर रहा है?"

कीरो वास्तव में कहीं भागा नहीं था। वह लन्दन में ही छिपा बैठा था। अपने विरुद्ध ऐसी खबरें पढ़कर वह तुरन्त प्रकट हो गया। उसने अदालत में पहुँच कर अपनी सफाई पेश की; लेकिन इस बार वह एक चूक कर गया। उसने अपने बयान में कहा, "उक्त धन में से कुछ चोरी हो गया है, मैं उसी की खोज कर रहा था।"

न्यायाधीश को उस पर शक हो गया। उसने पूछा, "यदि ऐसा था, तो आपने चोरी की सूचना पुलिस में क्यों नहीं दी?"

कीरो ने बहुतेरी कोशिश की कि बच जाए, लेकिन उसकी भाग्यरेखा मन्द पड़ चुकी थी। जीवन भर दूसरों के भूत-भविष्य

की घोषणा करने वाला विलक्षण प्रतिभाशाली विद्वान स्वयं अपने विषय में कुछ न सोच पाया।

डोलर और उसके नौकरों की गवाही ने मामले को मजबूत कर दिया था। न्यायालय की दृष्टि में कीरो अपराधी प्रमाणित हुआ और उसे एक साल एक महीने के लिए जेल भेज दिया गया।

जीवन के अन्तिम भाग में कीरो को अपमान और ताड़ना भुगतनी पड़ी।

डोलर अपना धन पाकर हगरी लौट गया। फिर उसने कही हीरे की खानों की खोज नही की।

जेल में कीरो को तरह-तरह के अपराधियों को देखने का अवसर मिला। कोई चोर था और कोई जेबकतरा; कोई डाकू था, कोई हत्यारा। कुछ साधारण-सी मार-पीट करने के जुर्म में सजा भुगत रहे थे, तो कुछ आग लगाने या जहर देने के गर्हित अपराध में। उनमें कितने ही पढ़े-लिखे और ऊँचे घरानों के थे, फिर भी अपराधी तो थे ही। समाज उन्हे घृणा की दृष्टि से देखता था और कानून ने उन्हें दण्डित किया था।

धोखा देने के आरोप में सजा पाकर कीरो की आँखे खुल गईं। उसका मन स्वयं को धिक्कारने लगा।

एक दिन तो वह बहुत ही उद्विग्न हो उठा।

आधी रात का समय था। सारे कैदी सो रहे थे। चारों ओर मसान का-सा सन्नाटा व्याप्त था। ठंडी हवा के सर्राटे तीर की तरह चुभते थे। उसकी सनसनाहट सिसकारियों जैसी दर्दभरी मालूम होती थी। आसपास कही कोई नही था। सारा बैरक जैसे सूना हो गया था। हाँ, दूर नुक्कड़ पर सिपाही के बूटो की खट्-खट् रह-रहकर सुनाई पड़ जाती थी, बस।

उतनी रात बीत जाने पर भी कीरो की आँखों में नीद नही

ी । वह अपना ओवरकोट ओढ़े एक दीवार के सहारे उठँग कर
जमीन पर बैठा, चुरुट मुँह में दवाए कुछ सोच रहा था । अपने
विचारों में वह इतना तल्लीन था कि समय का कोई ध्यान नहीं
रहा । वह चुरुट पीना भी भूल गया था । उसके सामने अपने
जीवन की पिछली घटनाएँ एक-एक करके चलचित्र की भाँति
आ-जा रही थीं ।

कभी तो वचपन का नजारा दिखाई पड़ता, कभी न्यूयार्क के
दृश्य । कभी रूस के जार का महल, कभी आर्थर पेगेट का
मकान । जीवन में देखे हुए हजारों हाथों के चित्र उसकी आंखों
के आगे नाच उठे । हजारों चेहरे···डाक्टर हेनरी मेयर. आस्कर
वाइल्ड, लार्ड किचनर, लिलियन रसेल और जार निकोलस
द्वितीय···

भाग्य की रेखाएँ ममुष्य को कहाँ से कहाँ पहुँचा देती हैं !
तव मुझ वेचारे की क्या हस्ती ? सव अपने को ऊँचाई तक ले
ने का इरादा करते हैं, लेकिन जव भाग्य साथ दे, तव तो ?

और मैंने स्वयं अपना हाथ क्यों नहीं कभी पढ़ा ? आह
तनी भयंकर भूल हुई । जीवन भर दूसरों का ही भूत-भविष
खता रहा; अपनी ओर कभी दृष्टि न डाली । एक बार अप
ाथ पढ़ लिया होता तो कम से कम इस सजा की सूचना तो
ही जाता ! अपने अपराध को कम तो कर ही सकता था !

लेकिन नहीं, जो हुआ, सो हुआ । मैं अव से सँभलूँगा ।
ही अपना हाथ पढ़ कर आगे के लिए अपना कर्तव्य नि
करूँगा ।

जैसे सोते हुए व्यक्ति को किसी ने ठोकर मार दी हो,
फौरन उठ खड़ा हुआ । उसने दूसरा चुरुट निकाला और
कर पीते हुए इधर-उधर टहलने लगा ।

इस समय उसके पैरों में नई शक्ति आ गई थी

उत्साह से भर उठा था, जैसे कोई रोगी अच्छा होकर अस्पताल से लौटा हो। डोलर के साथ किए गए अपने षड्यन्त्र पर आत्म-ग्लानि की आग ने कीरो के मन का सारा कलुष धो डाला था। लोभ की भावना लुप्त हो गई। सम्मान और प्रतिष्ठा की भूख फिर से जाग उठी और अपने ज्योतिष-ज्ञान द्वारा कीरो ने एक बार फिर संसार में अपना नाम ऊँचा करने का दृढ़ संकल्प कर लिया।

अगले दिन दोपहर को उसने अपनी हस्तरेखाएँ देखीं—उफ ! मेरी धन-रेखा इतना आगे बढ़ गई ! लेकिन उस पर यह विरोध-चिह्न ! तब क्यों न कारावास मिलता ? आगे वह चिह्न समाप्त हो गया है और सूर्य-रेखा की चमक बढ़ रही है !

तब अवश्य ही इस कारावास के बाद मुझे फिर सम्मान मिलेगा। मिल कर रहेगा।

कीरो सन्तुष्ट हो गया। उसने मन ही मन निश्चय किया—जीवन के अन्तिम दिनों में मैं अपनी इस कलंक-कालिमा को धोकर ही मरूँगा।

वह एक-एक दिन गिनकर सजा पूरी होने की प्रतीक्षा करने लगा।

जेल से छुटकारा पाते ही उसने न्यूयार्क में रहने का निश्चय किया।

घर पहुँचते ही वह अपनी पुस्तकें आदि सहेजने लगा और अपने फर्नीचर की नीलामी के लिए एक नीलाम कम्पनी को पत्र लिख दिया।

कीरो के लन्दनवासी मित्रों और भक्तों को जब उसकी विदेश-यात्रा का समाचार मिला, तो झुण्ड के झुण्ड लोग उससे मिलने के लिए आने लगे।

डोलर के साथ धन के लेन-देन में कीरो को सजा हुई थी,

यह दूसरी बात है, लेकिन जहाँ तक ज्ञान और विद्वत्ता का प्रश्न था, कीरो अपने विषय का अद्वितीय ज्ञाता था। उस जैसा प्रकाण्ड ज्योतिषी और हस्तरेखा-विशारद सारे संसार में कोई नहीं था। इतना ही नहीं, इधर लगभग चार सौ वर्षों में भी कोई ऐसा दिग्गज ज्योतिषी नहीं पैदा हुआ था।

उसकी अमेरिका-यात्रा का समाचार फैलते ही चारों ओर से विदाई और बधाई के सन्देश मिलने लगे। दावतों और पार्टियों का तांता-सा लग गया। कई जगह तो उसे मानपत्र भी समर्पित किए गए।

अन्त में प्रस्थान का दिन भी आ गया।

सूरज की सुनहरी किरणों से झिलमिलाता हुआ एक सवेरा। लन्दन के बन्दरगाह पर अमेरिका जाने वाला 'फ्रेण्डशिप' नामक जलयान खड़ा था। छूटने में थोड़ी ही देर थी। यात्री अपने-अपने कमरों में पहुँच गए थे। विदाई देने वाले लोग रूमाल हिला-हिलाकर अपनी शुभकामनाएँ प्रकट कर रहे थे।

ठीक तभी एक बूढ़ा अंग्रेज नीचे उतरा और भीड़ में खड़े एक व्यक्ति से बोला, "परकिन्स! हो सकता है कि मैं अब वापस न आऊँ। इसलिए यहाँ की सारी देख-भाल तुम्हें ही करनी है। वैसे मैं कोशिश करूँगा कि तुम्हें भी अमेरिका बुला लूँ।"

"आपकी उदारता अतुलनीय है..." कहते-कहते परकिन्स का गला भर आया।

"मन में किसी प्रकार की चिन्ता अथवा दुख मत आने दो, परकिन्स! हम सब ईश्वर के हाथों की कठपुतली हैं। भाग्य-रेखाओं की डोरी में बाँधकर वह हमें नचाता रहता है। उसकी इच्छा के विरुद्ध हम कुछ भी नहीं कर सकते।"

परकिन्स ने भावविभोर होकर कीरो का हाथ दबाया।

तभी 'फ्रेण्डशिप' का साइरन बज उठा।

कीरो ने अपनी मूल्यवान अँगूठी परकिन्स को देते हुए कहा, "और क्या दूँ ! लो, मेरा यही स्मृति-चिह्न अपने पास रखना।"

"स्वामी..." गला रुँध गया था। बड़े प्रयास के बाद भी परकिन्स कुछ और नहीं कह सका।

कीरो जहाज की ओर बढ़ चला था। साइरन के चीत्कार में उसने परकिन्स का वह आर्त स्वर सुना भी या नहीं, कौन जाने ?

परकिन्स भीगी, डबडबाई आँखों से देखता रहा—समुद्र की नीली सतह पर फिसलता हुआ 'फ्रेण्डशिप' धीरे-धीरे दूर होता जा रहा है। प्रोफेसर कीरो रूमाल हिला-हिलाकर उससे कुछ कह रहे हैं। हवा के सर्राटे बढ़ गए हैं। जहाज के इंजन से निकलने वाला धुआँ आकाश में घना होता जा रहा है।

परकिन्स विह्वल हो उठा। उसकी आँखों से दो बड़े-बड़े जल-बिन्दु ढुलक पड़े। पुतलियाँ जैसे स्थिर हो गईं। उसे अपने आगे अँधेरा-सा प्रतीत होने लगा। मन में उठे अनेक प्रकार के विचारों की आँधी ने उसे एकबारगी झँझोड़ डाला। वह खड़ा न रह सका, तुरन्त घर की ओर लौट पड़ा।

और 'फ्रेण्डशिप' जहाज उस जगत्-विख्यात ज्योतिषी को लिए हुए अमेरिका की ओर तैरता चला जा रहा था।[1]

---

१. यही कीरो की अन्तिम यात्रा थी। उसके जीवन के शेष दिन अमेरिका में ही बीते। लन्दन से वहाँ पहुँचकर उसने फिर से रेखाएँ पढ़ने का धन्धा शुरू कर दिया था। अन्तिम समय वह हालीवुड नामक प्रसिद्ध स्थान में रहा। वहीं सन् १९३६ में वह दिवंगत हुआ। उसकी समाधि आज भी हालीवुड में मौजूद है।